संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 52
पृष्ठ 8
रविवार
09 नवम्बर 2025
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- शादी से पहले हेल्दी और शाइनी....

विचार- सेवा के संकल्प से क्रांति तक...

खेल- भारत-पाकिस्तान एशिया कप ट्रॉफी...

वंदे भारत को हरी झंडी दिखाकर प्रधानमंत्री बोले-

ये भारतीयों की, भारतीयों द्वारा बनाई गई ट्रेन है

वाराणसी,संवाददाता। बनारस रेलवे स्टेशन से शनिवार की सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बनारस से खजुराहो जाने वाली वंदेभारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। पीएम ने यहां से देशवासियों को चार वंदे भारत की सौगात दी। इसके बाद उन्होंने कहा कि आज वंदे भारत, नमो भारत और अमृत भारत जैसी ट्रेनें, भारतीय रेलवे की अगली पीढ़ी की नींव तैयार कर रही हैं। वंदे भारत भारतीयों की, भारतीयों द्वारा, भारतीयों के लिए बनाई गई ट्रेन है। जिस पर हर भारतीय को गर्व है। आज जिस तरह से भारत ने विकसित भारत के लिए अपने साधनों को श्रेष्ठ बनाने का अभियान शुरू किया है, ये ट्रेनें उसमें एक मील का पत्थर बनने जा रही हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन की शुरुआत भोजपुरी में करते हुए कहा, "बाबा विश्वनाथ के इ पावन नगरी में आप सब लोगन के काशी के परिवारजन के हमार प्रणाम। देव दीपावली के बाद आज के दिन भी काशी के विकास पर्व पर आप सबके शुभकामना देत हईं।" प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित देशों की प्रगति का सबसे बड़ा आधार मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर रहा है। भारत भी अब तेजी से उसी राह पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि रेलवे नेटवर्क, सड़कों और नई व्यवस्थाओं के विस्तार से देश के हर हिस्से में विकास की नई गाथा लिखी जा रही है। पीएम मोदी ने बताया कि देश में अब 160 से अधिक वंदे भारत ट्रेन संचालित हो रही हैं। ये ट्रेन भारत की इंजीनियरिंग क्षमता और आत्मनिर्भरता की प्रतीक हैं। "वंदे भारत, नमो भारत और अमृत भारत ट्रेनें भारतीय रेलवे की अगली पीढ़ी की नींव तैयार कर रही हैं। वंदे भारत भारतीयों द्वारा भारतीयों के लिए बनाई गई ट्रेन है, जिस पर हर भारतीय को गर्व है।" प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की तीर्थ यात्राएं केवल धार्मिक नहीं, बल्कि देश की आत्मा को जोड़ने वाली परंपरा है। उन्होंने कहा कि प्रयागराज, अयोध्या, हरिद्वार, चित्रकूट, कुरुक्षेत्र जैसे पावन धाम अब वंदे भारत नेटवर्क से जुड़ रहे हैं, जिससे आस्था और विकास दोनों का संगम हो रहा है।

उन्होंने कहा कि पिछले 11 वर्ष में उत्तर प्रदेश में तीर्थाटन और पर्यटन से आर्थिक गतिविधियों को नया बल मिला है। "पिछले वर्ष 11 करोड़ श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने आए, जबकि अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद 6 करोड़ से अधिक लोग रामलला के दर्शन कर चुके हैं। इससे यूपी की अर्थव्यवस्था को हजारों करोड़ का लाभ हुआ और लाखों लोगों को रोजगार मिला।" प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी अब स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी पूर्वांचल की हेल्थ कैपिटल बन गया है। पहले मरीजों को इलाज के लिए मुंबई जाना पड़ता था, लेकिन अब शहर में ही अत्याधुनिक अस्पताल, कैंसर सेंटर, आयुष्मान भारत और जन औषधि केंद्रों से लोगों को राहत मिल रही है। उन्होंने कहा कि "काशी में रहना, काशी आना और यहां जीना अब सबके लिए विशेष अनुभव बन गया है।" प्रधानमंत्री ने बताया कि शहर में सड़कों, गैस पाइपलाइन, स्टेडियम, और रोपवे जैसे कई बड़े प्रोजेक्ट तेजी से पूरे हो रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन के दौरान काशी के बच्चों की प्रतिभा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वंदे भारत ट्रेनों के उद्घाटन के दौरान विद्यार्थियों ने "विकसित भारत" पर सुंदर कविताएं और चित्र प्रस्तुत किए।

अमित शाह बोले-

सीमांचल को घुसपैठियों का अड्डा बनाना चाहते हैं राहुल-तेजस्वी

पूर्णिया,एजेंसी। गृह मंत्री अमित शाह ने पूर्णिया के बनमनखी में चुनावी सभा की। उन्होंने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रत्याशियों के लिए चुनाव प्रचार किया। अपने संबोधन के दौरान गृह मंत्री ने महागठबंधन पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राज्य के आधे हिस्से ने पहले ही कांग्रेस–राजद गठबंधन को नकार दिया है। एनडीए बिहार में 160 से अधिक सीटें जीतकर सरकार बनाएगी। मैं सीमांचल में आया है। मैं सीमांचल वालों की बात जानने आया हूं। आप बताओं सीमांचल से घुसपैठियों को बाहर निकालना चाहिए या नहीं निकालना चाहिए। यह अभी–अभी राहुल गांधी और लालू प्रसाद के बेटे तेजस्वी यादव घुसपैठियों बचाव यात्रा लेकर निकले थे। वह चाहते हैं सीमांचल घुसपैठियों का अड्डा बने। घुसपैठिये हमारे गरीबों का हक छीनते हैं। उन्होंने कहा कि हमलोग न केवल घुसपैठियों को निकालेंगे, बल्कि जमीन अधिग्रहण को भी जमींदोज कर देंगे। गृह मंत्री ने कहा कि भक्त प्रह्लाद और महर्षि मेंही की भूमि को मैं प्रमाण करता हूं। बिहार के पहले दलित मुख्यमंत्री भोला पासवान शास्त्री को मैं प्रमाण करता हूं। इस चुनाव में दो खेमे लगे हैं। एक ओर बिखरा हुआ ठगबंधन और दूसरे ओर पांच पांडवों वाला एनडीए है। आधे बिहार ने वोट डाल दिए हैं। पहले चरण में लालू–राहुल की पार्टी का सूफड़ा साफ हो गया। बिहार में एनडीए सरकार बनने वाली है। मोदी–नीतीश के नेतृत्व में बिहार आगे बढ़कर एक विकसित राज्य बनने जा रहा है। अगले पांच साल में सीमांचल में एक–एक अवैध गतिविधि को भाजपा और एनडीए की सरकार उखाड़ फेकेंगी। हमारी मतदाता सूची से घुसपैठिये निकालने चाहिए या नहीं निकालने चाहिए। यह राहुल गांधी और लालू प्रसाद घुसपैठियों को बचाना चाहते हैं। लेकिन, आप दोनों कान खोलकर सुन लें कि हमलोगों उन्हें सीमांचल की धरती से निकाल कर उनके देश भेज कर रहेंगे।

सीएम योगी बोले...

भगवान राम-कृष्ण के बाद अब छठ माई का विरोध कर रहे महागठबंधन वाले

लखनऊ,संवाददाता। यूपी के योगी आदित्यनाथ की बिहार विधानसभा चुनाव में ताबड़तोड़ रैली जारी है। शनिवार को उन्होंने पिपरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार श्यामबाबू प्रसाद यादव के पक्ष में जनसभा कर कमल खिलाने की अपील की। उन्होंने कहा, भगवान राम–कृष्ण के बाद अब यह लोग छठ माई का भी विरोध कर रहे हैं। जो राम का विरोध और आस्था का अपमान करते हैं, उन्हें कतई वोट नहीं देना है। कांग्रेस राम को नकारती थी, राजद राम मंदिर निर्माण की रथ यात्रा को रोकती थी, समाजवादी पार्टी रामभक्तों पर गोली चलाकर लहुलूहान करती थी। जब रामभक्त कहते थे कि रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे। कांग्रेस, राजद व सपा सरकारें रामभक्तों पर गोली–लाठी चलाती थीं, तब भी रामभक्त कहता था कि लाठी गोली खाएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे।

यूपी में एनडीए सरकार बनी तो अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का निर्माण हो गया। अयोध्या में अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट महर्षि वाल्मीकि, रैनबसेरा निषादराज, रसोई मां शबरी के नाम पर बनी है। सीतामढ़ी में भी मां जानकी के भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है। कांग्रेस और महागठबंधन वाले भगवान राम–कृष्ण के बाद अब छठ माई का भी विरोध कर रहे हैं। सीएम ने मतदाताओं से अपील की कि जो राम का विरोध और आस्था का अपमान करते हैं, उन्हें वोट देकर जाया नहीं करना चाहिए। सीएम योगी ने कहा कि पहले चरण के चुनाव के बाद हताश और निराश महागठबंधन के लोगों का वक्तव्य दिख रहा है। यह बताता है कि 14 नवंबर को जब ईवीएम खुलेगी तो जनता का फैसला बिहार में शफिर एक बार एनडीए सरकारश होगा। बिहार के लिए एनडीए सरकार आवश्यक है।

उन्होंने विपक्षी दलों पर प्रहार करते हुए कहा कि इन लोगों ने देश के सामने सुरक्षा व बिहार के सामने पहचान का संकट खड़ा किया। कांग्रेस, राजद, ए माले व इनके सहयोगी अपने–अपने क्षेत्र के कुख्यात सरगना हैं। इनके द्वारा अपराध को संरक्षण, भ्रष्टाचार को पनपाने के साथ ही अराजकता पैदा की गई। यह सभी जंगलराज के अपराधी हैं। जंगलराज से मुक्ति दिलाने के लिए नौजवानों ने 2005 में एनडीए नेतृत्व पर विश्वास किया था। परिणाम स्वरूप नीतीश बाबू की सरकार बनी।

सीएम योगी ने कहा कि जिस बिहार ने दुनिया को ज्ञान दिया। उसे राजद, नक्सलवाद व माओवादियों के गठबंधन ने साक्षरता में पीछे ढकेल दिया। नौजवानों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा। अपनी प्रतिभा व मेधा के लिए जगविख्यात बिहार का नौजवान पहचान के लिए मोहताज हुआ तो इसकी दोषी कांग्रेस, राजद व ए माले है। सीएम योगी ने कहा कि 20 वर्ष में नीतीश बाबू के नेतृत्व में नए बिहार का स्वरूप दिख रहा है। बिहार जिसका हकदार था, वह हर कार्य आज यहां हो रहा है। जो कार्य 30–50 वर्ष पहले होना चाहिए था, वह कार्य पिछले 20 वर्ष से हो रहा है।

11 वर्ष के अंदर इसमें और तेजी आई है। बिहार में अब सड़क, बिजली, एयरपोर्ट, एनआईटी, आईआईटी, आईआईएम, एम्स, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज की श्रृंखला है। बिहार में रोजगार, सुरक्षा, सम्मान के लिए प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। सीएम योगी ने केंद्र सरकार की योजनाओं का भी जिक्र किया। बोले कि पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत बदला है। मोदी जी 80 करोड़ लोगों को फ्री राशन दे रहे हैं, जबकि राजद वाले पशुओं का भी चारा खा गए थे। एनडीए रोजगार के साथ ही पंच गारंटी (आवास, बिजली, राशन, स्वास्थ्य, पानी) भी दे रही है।

सीएम योगी ने कहा कि एक ओर विकास, विरासत का सम्मान, गरीब कल्याण है तो दूसरी ओर अपराध, अपराधियों, नक्सलवाद, माओवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति है। पीएम मोदी ने कहा कि मार्च 2026 तक माओवाद व नक्सलवाद को भारत की धरती से सर्वदा समाप्त कर देना है। सीएम ने पिपरा के लोगों से अपील की कि किसी नक्सलवादी को वोट नहीं देना है। नक्सलवाद, अराजकता को फिर से नहीं आने देना है।

महाराष्ट्र सरकार की याचिका पर सुप्रीम टिप्पणी

धर्मनिरपेक्षता व्यावहारिक हो, कागजों तक सीमित न रहे

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजय कुमार ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता का व्यावहारिक रूप से पालन किया जाना चाहिए। इसे केवल कागजों तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। जस्टिस कुमार की टिप्पणी महाराष्ट्र सरकार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट के उस खंडित फैसले का हिस्सा है, जिसमें 2023 के अकोला दंगों की जांच के लिए एसआईटी गठित करने संबंधित 11 सितंबर के शीर्ष आदेश की समीक्षा की मांग की गई थी। शीर्ष कोर्ट ने अकोला दंगों के दौरान एक हमले की जांच में महाराष्ट्र पुलिस की विफलता की आलोचना करते हुए विशेष जांच दल गठित करने का आदेश दिया था। शीर्ष कोर्ट ने इस एसआईटी में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों से वरिष्ठ अधिकारी शामिल करने के लिए कहा था। राज्य सरकार ने इस आदेश की समीक्षा के लिए यह याचिका दायर की थी। राज्य सरकार का दावा था कि हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के अधिकारियों वाली एक एसआईटी के गठन का निर्देश, भले ही नेकनीयती से दिया गया हो लेकिन यह संस्थागत धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत का सीधा उल्लंघन करता है, जिसकी पुष्टि न्यायालय ने संविधान के मूल ढांचे के एक भाग के रूप में बार–बार की है। राज्य सरकार का तर्क था कि यह निर्देश लोक सेवकों के अंदर सांप्रदायिक पूर्वाग्रह को पूर्वधारणा देने जैसा है। जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस सतीश चंद शर्मा की पीठ ने इस समीक्षा याचिका पर खंडित फैसला सुनाया। जस्टिस कुमार को 11 सितंबर के फैसले पर पुनर्विचार को कोई आधार नहीं दिखा वहीं जस्टिस शर्मा ने अपने फैसले में कहा कि पुनर्विचार की मांग इस सीमा तक की गई थी कि विशेष जांच दल में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के अधिकारी शामिल करने का निर्देश दिया गया था। जस्टिस शर्मा ने खुली अदालत में सुनवाई की अनुमति दी और याचिका पर नोटिस जारी किया। 11 सितंबर के आदेश का हवाला देते हुए जस्टिस कुमार ने कहा कि तथ्यों से स्पष्ट है कि संज्ञेय अपराध होने की सूचना दिए जाने के बावजूद न तो संबंधित थाने के अधिकारियों और न ही पुलिस अधीक्षक ने कम से कम प्राथमिकी दर्ज करके आवश्यक कार्रवाई की।

शराब पीकर पीटने वाला अचानक साड़ी लाए तो झांसे में मत आना : प्रियंका

कटिहार,एजेंसी। कटिहार में प्रियंका गांधी सभा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि, ये लोग आपको 10–10 हजार रुपए दे रहे हैं। पहले दिए थे क्या। चुनाव पास आए हैं तो दे रहे हैं। पुरुष कभी महिलाओं का दर्द नहीं सझ पाएंगे। आप काम से लौटकर आराम करते हो। लेट जाते हो। वो खाना बनाती है। अगले दिन बच्चों के स्कूल जाने की तैयारी करती है। आखिरी में खाना खाती है। सबसे सोने के लिए इंतजाम करती है। अगर आपकी कोई सहेली होती जिसका पति रोज उसे डांटता, पीटता तो आप क्या कहती। एक दिन साड़ी ले आता तो क्या कहती। यही कहती ना इसकी बातों में मत आना। 10 साल से तुम्हें पीट रहा है। इसके बहकावे में मत आना। ऐसे ही बीजेपी वालों ने सोचा कि चुनाव आ गए हैं 10 हजार दे दो वोट मिल जाएगा। आप समझदार हो इनसे पैसे ले लो। वोट इन्हें मत देना। आपने मोदी जी की भाषा सुनी है। कहीं कट्घटा, अपहरण, हत्या, दुनाली क्या मतलब है। इनके कार्यकर्ता लोगों के घर जाकर प्रार्थना करवा रहे हैं। धर्म के नाम पर वोट मांग रहे हैं। लोगों को डरा रहे हैं। देश के प्रधानमंत्री की हिम्मत होनी चाहिए कि आपके मंच पर आएं और रोजगार की बात करें। आपको बताएं कि पुल क्यों नहीं बना। कितने कॉलेज खुलवाएंगे। कितनी यूनिवर्सिटी बनवाएंगे। प्रियंका गांधी ने आगे कहा, सरकार आपका वोट का अधिकार छीन रही है। बीजेपी संविधान कमजोर करने की कोशिश कर रही है। ये लोग वोट चोरी कर रहे हैं। आपके अधिकारों को खत्म किया जा रहा है। मंच से कहा, कौन है वोट चोर। उन्होंने मंच से ज्ञानेश कुमार, विवेक जोशी, एसएस संधू के नाम के नारे लगवाए।

लड़कों से बात करती थी, पसंद नहीं करते थे घरवाले, प्रयागराज में नाबालिग की नृशंस हत्या में नया मोड़, पिता-चाचा हिरासत में

प्रयागराज (संवाददाता)। घूरपुर में किशोरी की गला रेतकर नृशंस हत्या के मामले में शुक्रवार को नया मोड़ आ गया। दूर के रिश्ते में मृतका का चाचा लगने वाला एक युवक सामने आया, जिसने चौंकाने वाला खुलासा किया। कहा कि सरिता लड़कों से बात करती थी और यह उसके परिवारवालों को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। फिलहाल यह जानकारी सामने आने के बाद पुलिस ने पिता व चाचा को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। क्या बताया युवक ने

सरिता लड़कों से बात करती थी। गांव के ही लड़के थे जिनसे वह अक्सर बात किया करती थी। यह बात उसके घरवालों को पसंद नहीं थी। कुछ दिनों पहले पिता रमेश ने एक लड़के को इसी बात पर जमकर पीटा भी था। बेटी को भी मना करता था और उसकी पिटाई भी कर चुका था।ए युवक के इस बयान के बाद घरवालों की भूमिका संदिग्ध हो गई। इसलिए क्योंकि कई बार में पूछताछ के बाद भी उन्होंने इस संबंध में किसी तरह की जानकारी पुलिस को नहीं दी। इस मामले में घरवालों के शक के घेरे में आने की एक और बड़ी वजह पोस्टमार्टम में आई फाइंडिंग्स हैं। पीएम रिपोर्ट से यह क्लीयर है कि किशोरी की मौत रात में ही हुई, जबकि घरवाले यही कहते रहे कि वह सुबह 5रू30 बजे घर से निकली और आठ बजे उसकी मौत की सूचना मिली। दरअसल सूत्रों का कहना है ष्पोस्टमार्टम बृहस्पतिवार शाम चार बजे हुआ। इस दौरान पाया गया कि मौत करीब 16 घंटे पहले हुई। पेट में अन डाइजेस्टेड चावल भी मिला। यानी खाना खाने के बाद ही यह वारदात की गई। इस मामले में अब बड़ा सवाल यह भी है कि बेटी की मौत को लेकर मां–भाई ने झूठ क्यों बोला। दरअसल पिता के साथ ही मां ने भी यही कहा था कि बेटी सुबह 5रू30 बजे घर से निकली। उसका तो यहां तक कहना था कि सुबह बेटी उसके सामने ही सोकर उठी। उधर घर में ही मौजूद रहने वाले उसके एक भाई ने भी चुप्पी साधे रखी। ऐसे में अब उनकी भूमिका की भी जांच की जा रही है। बता दें कि मृतका का सबसे बड़ा भाई मुंबई में रहता है जो शुक्रवार को बहन की मौत की जानकारी पर घर आया। सबसे छोटा भाई मानसिक दिव्यांग है। एक अन्य भाई है जो घटना वाली रात माता–पिता के साथ घर पर था। डीसीपी यमुनानगर विवेकचंद्र यादव ने बताया, ष्कुछ क्लू मिले हैं जिन पर काम किया जा रहा है। अलग–अलग चार टीमें लगाई गई हैं। एक चश्मदीद मिला है जिसने कुछ अहम जानकारियां दी हैं। इसी आधार पर इनवेस्टिगेशन को आगे बढ़ाया जा रहा है। घटना का खुलासा जल्द किया जाएगा।

भाजपा नेता की पत्नी को चुनाव न लड़ने की धमकी, बबली यादव ने कहा

पति के हत्यारे से एक बार मिलना चाहती हूं, आखिर मेरे पति को क्यों मारा

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में भाजपा नेता रणधीर यादव की हत्या को 2 महीने का समय बीत चुका है। हत्यारोपी रामसिंह और उदय यादव को पुलिस ने जेल भेज दिया है। वहीं, भाजपा नेता रणधीर यादव की पत्नी व जिला पंचायत सदस्य बबली यादव अब भी पति की मौत को एक बड़ी राजनीतिक साजिश बता रही है।

उन्होंने कहा– मैं पति की राजनीतिक विरासत को किसी भी हाल में नहीं खोने देंगी। इसके लिए मैं रात दिन वार्ड नंबर 46 के 52 गांव की जनता से रोज मुलाकात कर जनाधार मजबूत करने में लगी हुई है। क्षेत्र की जनता भी पूरी शिद्दत से मुझे प्यार और आशीर्वाद देती है। मेरी लोकप्रियता को बढ़ता देख मेरे राजनीतिक प्रतिद्वंदी मुझे भी पति की तरह रास्ते से हटाने का षडयंत्र रच रहे हैं। मुझे लगातार धमकियां मिल रही है।

बातचीत के दौरान बबली यादव के चेहरे पर एक साथ दो भाव देखने को मिले एक पल में गुस्सा और पलक झपकते ही दुख से आंखों में आंसू आ गए। वह खुद को संभाल नहीं सके और रो पड़ी। बबली के मुताबिक, पुलिस ने उन्हें उदय यादव से एक बार भी आमना सामान नहीं कराया। उन्होंने पुलिस अफसरों से उसके लिए मिन्नतें की, लेकिन किसी ने उनकी एक नहीं सुनी।

सवाल : पति की हत्या का रहस्य पुलिस ने खुलासा कर हत्यारोपियों को गिरफ्तार कर लिया। फिर भी आप राजनीतिक हत्या की बात किस आधार पर कह रही है? जवाब : मेरे पति रणधीर यादव वार्ड नंबर 46 से जिला पंचायत सदस्य साल 2015 में चुने गए थे। उस समय वह समाजवादी पार्टी में हुआ करते थे। क्षेत्र में राजनीतिक दबाव के चलते साल 2022 के पंचायत चुनाव पर्चा दाखिल करने से पहले हमें खूब परेशान किया गया।

मेरे नामांकन से पहले क्षेत्र के एक गाव में हुई जघन्य अपराध की घटना में पति रणधीर का नाम जोड़ कर पुलिस से प्रताड़ित कराया गया। यहां तक कि उसके घर में घुस कर बदमाशों द्वारा मारपीट की गई। पुलिस ने राजनीतिक दबाव में आकर उनका उनके पति समेत पूरे परिवार का उत्पीड़न किया गया। मजबूरन हमें सत्ताधारी दल में शरण लेनी पड़ी।

सवाल : पति की हत्यारोपी जेल जा चुके हैं, बावजूद इसके आपको जान का भय क्यों? जवाब : राजनीतिक विरोधियों ने पति को रास्ते से हटाकर उनकी राजनीतिक जमीन को हथियाने की कोशिश में लगे है, लेकिन पति की मौत के बाद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी है। वह किसी भी कीमत में उनकी राजनीतिक विरासत को नहीं

खोना चाहती है।

इसलिए वह अपनी जनता के बीच जाकर आशीर्वाद की कामना कर रही है। क्षेत्र में उनकी सक्रियता को देख कर विरोधियों की नींद उड़ गई है। अपनी हार आंखों के सामने देख वह उनके अब धमका रहे है कि चुनाव लड़ने पर अंजाम भुगतना होगा। हालांकि उन्होंने साफ किया कि वह निडर और निर्भीक होकर क्षेत्र के जनता की सेवा करती रहेगी।

सवाल : आप जिला पंचायत सदस्य हैं, चुनाव की तैयारी कैसी चल रही है? जवाब : तैयारी है, लेकिन संघर्ष भी बहुत है। पति के जाने के बाद परिवार का आजीविका का सारा बोझ मुझ पर आ गया है। बच्चों की देखभाल अकेले करना पड़ रहा है।

सवाल : पति की मौत के बाद उनकी कार 2 माह बाद मिली, क्या–क्या नुकसान हुए? जवाब : गाड़ी पूरी तरह क्षतिग्रस्त है, अंदर सामान जला हुआ है, बैटरी और टायर खराब हैं। नकदी, चौन व फोन भी गायब हैं। राइफल का पता नहीं चल पाया।

सवाल : पति की हत्या के बाद पुलिस ने जो कार्यवाही की क्या आप उससे संतुष्ट है? जवाब : आरोपियों को रिमांड पर लेने की बात कही गई थी, पर हमें उनसे मिलवाया नहीं गया। कुछ लोगों को पकड़ा गया पर राइफल नहीं मिली और जांच से संतोष नहीं हुआ।

सवाल : आप लगातार धमकियां मिलने की बात कह रही हैं, कौन लोग है? जवाब : घर पर लोग आकर कहते हैं कि घर में रहो, चुनाव मत लड़ो, क्षेत्र में मत जाओ। लगातार डराया जा रहा है। पति रणधीर के समय से उनके राजनीतिक विरोधी है, इसमें सत्ता से जुड़े नाम भी है और विपक्ष से जुड़े कई नाम है। अभी खुलासा करने का समय नहीं है, समय आने पर एक एक बात का खुलासा सबके सामने आकर करुंगी।

सवाल : आप चुनाव प्रचार में लगातार सक्रिय है, क्षेत्र की जनता का रुख क्या है? जवाब : जनता पूरी तरह समर्थन में है। वे कह रहे हैं कि अगर सरकार मदद नहीं करेगी तो वे खुद इकट्ठा कर चुनाव लड़वाएंगे। महिलाएं और बुजुर्ग बहुत सहानुभूति दिखा रहे हैं। गांव की महिलाएं उन्हें देख कर रोने लगती है। देखकर लगता है कि अपना दुख साझा करूं या फिर उन्हें ढांढ़स बढ़ाऊ।

सवाल : पति के हत्या के बाद आपको सरकार से आर्थिक मदद मिलनी थी, क्या वह मिली? जवाब : नहीं ,हम मुख्यमंत्री तक अपनी गुहार ले जाना चाहेंगे। अगर मदद नहीं मिली तो हम बच्चों के साथ वहीं बैठकर अपनी मांगें उठाएंगे। हम डरकर नहीं बैठेंगे, पति की मेहनत और जनता की उम्मीद के लिए लड़ना है।

सवाल : बच्चों और परिवार की हालत कैसी है? जवाब : बच्चे व परिवार मानसिक रूप से टूटे हुए हैं। आसपास की महिलाएं बहनों जैसा स्नेह दिखा रही हैं, पर हमें आर्थिक व सुरक्षा मदद चाहिए।

सवाल : आप प्रदेश के मुख्यमंत्री से क्या मांग करना चाहेंगी? जवाब : हम मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी से न्याय और सुरक्षा चाहते हैं। सरकार से कार्रवाई और मदद की उम्मीद है, अन्यथा हम अपने हकों के लिए सड़कों पर आवाज उठाएंगे।

प्रयागराज में फर्म सोसाइटीज के 2 कर्मचारी जेल भेजे गए

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में सहायक रजिस्ट्रार फर्म्स, सोसाइटीज एंड चिट्स कार्यालय में रिश्वतखोरी के मामले में गिरफ्तार लेखाकार रागविराग और कंप्यूटर ऑपरेटर विजयराज सिंह शुक्रवार को जेल भेज दिए गए। दोनों को एंटी करप्शन कोर्ट वाराणसी के समक्ष पेश किया गया। यहां रिमांड मंजूर होने के बाद उन्हें वाराणसी जेल में दाखिल कराया गया। सूत्रों के मुताबिक, यह रिश्वत कुल 1.5 लाख रुपए की थी। आरोप है कि फतेहपुर के ज्ञान भारती मूला देवी एम.एस. जूनियर हाईस्कूल बिंदकी और श्री भैरवनाथ जूनियर हाईस्कूल नरैनी की प्रबंध कमेटियों के रिन्युअल के एवज में यह रकम मांगी जा रही थी। दोनों स्कूलों के रिन्युअल के लिए प्रयागराज स्थित सहायक रजिस्ट्रार कार्यालय में दस्तावेज जमा किए गए थे। आरोप है कि कार्यालय के लेखाकार रागविराग ने फाइल पास करने के लिए दोनों स्कूलों से 75–75 हजार रुपए की मांग की। जब प्रबंधकों ने इनकार किया, तो उन्होंने फाइल निरस्त कराने की धमकी दी। पुलिस ने बताया कि ज्ञान भारती स्कूल के प्रबंधक रतिपाल सिंह ने भ्रष्टाचार निवारण संगठन प्रयागराज इकाई में शिकायत दर्ज कराई। जांच में शिकायत सही पाए जाने पर प्रभारी निरीक्षक अलाउद्दीन अंसारी के नेतृत्व में टीम ने जाल बिछाया।

उत्तर मध्य रेलवे

No.: C-65/Catg/PAD/Shortlisting/2025 Date: 06.11.2025

नोटिस संख्या पी.ए.डी.- 03/2025

भारत के राष्ट्रपति के ओर से प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज द्वारा लाइसेंसी एवं विभागीय खानपान यूनिटों, एम.पी.एस. यूनिटों और फ्रूट एवं जूस स्टॉल यूनिटों के उपयोग/सेवा/बिक्री के लिए निम्नलिखित उत्पादों के प्रतिष्ठित ब्रांडों वाले कंपनियों/फर्मों आदि को शॉर्टलिस्ट करने हेतु विनिर्माताओं से निर्धारित प्रोफॉर्मा मे आवेदन आमंत्रित करते हैं।

S.No.	Name of the Products
1	Fruit Juice in Tetra Pack/Sealed bottles & Canes
2	Cake
3	Milk Product (Flavoured Milk / Lassi / Butter Milk) in tetra packed / pet bottles
4	Ice Cream
5	Frozen Dessert
6	Packed Nimbu Pani, Flavoured drinks in Tetra packed/pet bottles
7	Packed Coconut Water in Tetra packed/pet bottles.
8	Tea Bulk Pack in packets & tea bags
9	Coffee powder bulk pack in packets & sachet
10	Packed Bakery Products
11	Tomato Ketchup-Bottles/Sachets
12	Butter in Foils/Blister Pack (8-10 Gms)
13	Pickle in Blister Pack/Sachet
14	Baby Food: Powdered Milk for Infants
15	Baby Food: Cereal Mix
16	Sugar in Sachet
17	Dairy Creamer in Sachet
18	**GAJAK** (Must be packed and each pack should be suitably marked name of material, Batch No. Code No., Date of Packing, Best before & Net weight)
19	**DALMOTH** (Must be packed and each pack should be suitably marked name of material, Batch No. Code No., Date of Packing, Best before & Net weight)
20	**REWRI** (Must be packed and each pack should be suitably marked name of material, Batch No. Code No., Date of Packing, Best before & Net weight)

आवेदन फार्म प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक, उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय, चक्वल परिसर सूबेदारगंज, प्रयागराज के कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस में **प्रातः 10.00 बजे से 18.00 बजे** तक **दिनांक 01.12.2025** तक प्राप्त किये जा सकते हैं। आवेदन पत्र का मूल्य पाँच हजार रुपये + जी.एस.टी. @18% (रुपया 5000/- + 18 प्रतिशत जी.एस.टी.) रखा गया है। निर्धारित जी.एस.टी. संबंधित आवेदक जी.एस.टी. विभाग में जमा करवाना सुनिश्चित करे। आवेदन पत्र एवं विस्तृत नियम व शर्तें रेलवे के वेबसाइट **www.ncr.indianrailways.gov.in** के पोर्टल में जाकर टेंडर एवं नोटिस से भी डाउन लोड कर सकते हैं। **आवेदन पत्र जमा करने का स्थान एवं तारीख व समयः-** आवेदन पत्र इस अधिसूचना के जारी होने के पश्चात किसी भी कार्य दिवस में **प्रातः 10.00 बजे से सायं 18.00 बजे** के मध्य एवं **दिनांक 02.12.2025** को **प्रातः 10.30 बजे** तक प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक, मुख्यालय, चम्बल परिसर, सूबेदारगंज, प्रयागराज के कार्यालय में रखे ड्रॉप बॉक्स में डाला जा सकता है। इसके पश्चात डाले गए किसी भी आवेदन को स्वीकार नहीं किया जाएगा। आवेदन **दिनांक 02.12.2025 को समय 11.00 बजे** खोला जाएगा। यह स्पष्ट किया जाता है कि यह निविदा नहीं है बल्कि उपरोक्त दर्शाये गए उत्पादों के प्रतिष्ठित ब्रांडों एवं कंपनियों/फर्मों **2105/25(A)**

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

प्रयागराज में एसडीएम ने महिला डॉक्टर को धमकाया, गालियां दीं

बोले– मैं बहुत पावरफुल, तुम जैसे तलवे चाटते हैं, हॉस्पिटल बंद करवा दूंगा

प्रयागराज (संवाददाता)। औरैया में तैनात एसडीएम कमल सिंह ने प्रयागराज के हॉस्पिटल में महिला डॉक्टर को धमकाया। उन्हें गालियां दीं और चैंबर में तोड़फोड़ की। पीड़ित डॉ. विभा राय ने कहा, कमल ने खुद को प्रशासनिक अधिकारी बताया।

धमकी दी कि मैं बहुत पावरफुल व्यक्ति हूं, तुम्हारे जैसे डॉक्टर मेरे तलवे चाटते हैं। तुम्हारा हॉस्पिटल बंद करवा दूंगा। मैंने पुलिस में शिकायत की, लेकिन उनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं हुआ। इस पर मैंने कोर्ट से गुहार लगाई।

इस मामले में 3 नवंबर को निचली अदालत में सुनवाई की। शुक्रवार को आदेश की कॉपी वेबसाइट पर अपलोड हुई, तब यह मामला सामने आया। कोर्ट ने परिवाद दर्ज कर एसडीएम को नोटिस जारी करने का आदेश दिया है। एसडीएम ने डॉक्टर के आरोपों को गलत बताया है।

डॉ. विभा राय प्रयागराज के झूंसी स्थित त्रिवेणीपुरम में संगम हॉस्पिटल चलाती हैं। उनका आरोप है कि 10 अगस्त की सुबह 11 बजे वह मरीजों को देख रही थीं, तभी कमल कुमार सिंह और पत्नी स्वाति सिंह उनके चैंबर में जबरन घुस आए।

दोनों ने गालियां दीं और हाथापाई की। हॉस्पिटल में लगे CCTV कैमरे में घटना रिकॉर्ड हो गई। हालांकि, चैंबर के अंदर कैमरा न होने के कारण वहां की रिकॉर्डिंग नहीं हो पाई। उन्होंने उसी दिन झूंसी थाने में CCTV फुटेज के साथ FIR दर्ज कराने के लिए शिकायत दी। डॉ. विभा ने बताया कि जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो 13 अगस्त को दोबारा थाने पहुंचीं। थाना इंचार्ज ने कहा कि जांच में पता चला है कि कमल कुमार सिंह औरैया के सदर तहसील में एसडीएम हैं। इसलिए कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती। इसके बाद उन्होंने पुलिस आयुक्त प्रयागराज, मुख्य सचिव, DGP और मुख्यमंत्री को डाक से एप्लिकेशन भेजी।

इसके बाद डॉक्टर विभा ने कोर्ट में गुहार लगाई। उन्होंने BNS की धारा 173(4) के तहत परिवाद दाखिल किया। कोर्ट ने सभी सबूतों सीसीटीवी फुटेज, शपथ–पत्र और प्रार्थना–पत्रों को देखा। पाया कि मामला गंभीर है। यह भी कहा कि पुलिस जांच से कोई नया तथ्य सामने आने की संभावना नहीं है।

ऐसे में इसे परिवाद के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। अदालत ने आदेश दिया कि विपक्षी पक्ष को सुनवाई का अवसर दिया जाए। मामले में विपक्षियों को नोटिस जारी करने का आदेश जारी करते हुए अगली सुनवाई के लिए 25 नवंबर की तारीख तय की गई है।

उन्होंने कहा– सभी आरोप गलत हैं। मैं अपनी बहन को दिखाने के लिए गया था, जिनका पहले से ही इलाज चल रहा था।

नंबर लेने के बावजूद करीब दो घंटे तक इंतजार करते रहे। पूछने पर बताया गया कि डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में हैं। बाद में डॉक्टर के आने पर पूछा गया तो उन्होंने मिसबिहेव किया। गार्ड ने मुझे धक्का देकर बाहर निकाला। मैं गोद में बच्चा लिए था। मूल रूप से प्रयागराज के हनुमानगंज के रहने वाले कमल कुमार सिंह चार महीने पहले जुलाई में तहसीलदार से एसडीएम बने। 27 जुलाई से वह औरैया जनपद के मुख्यालय में तैनात हैं। 41 साल के ये अफसर एसडीएम बनने से पहले आजमगढ़, मैनपुरी, रायबरेली और मिर्जापुर में तहसीलदार और नायब तहसीलदार पद पर तैनात रह चुके हैं।

रावेंद्र हत्याकांड में दो सगे भाइयों पर केस दर्ज

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज के रावेंद्र पासी उर्फ मुन्नु हत्याकांड में धूमनगंज पुलिस ने दो सगे भाइयों पर मुकदमा लिखा है। बेली गांव के दो सगे भाई आरिफ और आशिफ इनमें नामजद किए गए हैं। इन दोनों पर 50 हजार के इनामी नूरैन को अपने घर में छिपाने का आरोप है। जांच में यह बात सामने आई कि नूरैन जिस घर में छिपा था, वहां मौजूद घर की कुछ महिलाएं भी उसकी मदद कर रही थीं। पुलिस का कहना है कि उन्होंने न केवल आरोपी को शरण दी, बल्कि पुलिस की भनक लगने पर उसे बचाने की कोशिश भी की। धूमनगंज पुलिस दोनों की तलाश में जुटी है। इससे पहले भी रावेंद्र पासी हत्याकांड के आरोपियों को शरण देने के आरोप में सात लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस अब जांच कर रही है कि नूरैन को छिपाने की साजिश में और कौन–कौन शामिल था। धूमनगंज थाना प्रभारी राजेश उपाध्याय ने बताया कि जांच में जिसकी भी संलिप्तता पाई जाएगी, उस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

झोपड़ी में आग लगी, महिला बोली– 4 लोग आए थे

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज में शुक्रवार रात एक महिला की झोपड़ी में आग लग गई। महिला का आरोप है कि गांव के ही चार लोगों ने रंजिशन उसके घर में आग लगाकर जान से मारने की कोशिश की। गनीमत रही कि समय रहते उसने दरवाजा खोलकर बाहर निकलकर अपनी जान बचा ली, लेकिन पूरी झोपड़ी और उसमें रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। मामला कौंधियारा थाना क्षेत्र के ग्राम दगवापुर अमिलहवा गांव का है। महिला के पति की मौत हो चुकी है। घटना के समय घर पर अकेली थी। उसका बेटा ससुराल में निमंत्रण देने गया था। महिला ने बताया कि रात करीब 10 बजे चार लोग उसके घर आए और जबरन बाहर निकलने के लिए कहने लगे। जब उसने दरवाजा नहीं खोला तो आरोपियों ने झोपड़ी में आग लगा दी और बाहर खड़े होकर धमकी देने लगे कि अगर बाहर आई तो जिंदा जला देंगे। आग की लपटें बढ़ते देख महिला ने जान बचाने के लिए किसी तरह दरवाजा खोला और बाहर निकलकर शोर मचाने लगी। शोर सुनकर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। हालांकि तब तक झोपड़ी में रखा घरेलू सामान, कपड़े, अनाज और जरूरी कागजात सब जलकर राख हो चुके थे। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। थाना कौंधियारा प्रभारी निरीक्षक कुलदीप शर्मा ने बताया कि यह मामला पुरानी रंजिश का लगता है। पीड़िता की तहरीर जारी चौकी पर दिला दी गई है, उसके आधार पर जांच की जा रही है और आरोपियों की पहचान कर जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। ग्रामीणों के अनुसार, पीड़िता का परिवार पहले भी कुछ लोगों से विवाद में रह चुका है।

युवक को दोस्त ने चाकू से गोदकर मार डाला, प्रयागराज में मरणासन्न होने तक करता रहा वार, आरोपी की तलाश में दबिश

प्रयागराज (संवाददाता)। प्रयागराज के खुल्दाबाद थाना क्षेत्र के अटाला में शनिवार सुबह 40 वर्षीय सिराज उर्फ मोछा की उसके ही दोस्त अयाज ने चाकू से हमला कर हत्या कर दी। घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना पर खुल्दाबाद पुलिस, एसीपी कोतवाली रवि गुप्ता, फोरेंसिक टीम और डॉग स्क्वॉड मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी। जानकारी के मुताबिक सिराज मूल रूप से फतेहपुर का रहने वाला था। वह भाड़े पर गाड़ी चलाने का काम करता था और कई सालों से खुल्दाबाद क्षेत्र में किराए के मकान में रह रहा था। शनिवार सुबह करीब साढ़े छह बजे वह अटाला में रहने वाले अपने दोस्त अयाज के घर के पास पहुंचा था।

बताया जा रहा है कि दोनों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हुई और बात बढ़ते–बढ़ते झगड़े में बदल गई।इसी दौरान अयाज ने गुस्से में आकर सिराज पर चाकू से ताबड़तोड़ वार कर दिए। घायल सिराज लहूलुहान होकर मौके पर गिर पड़ा, जबकि अयाज फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल को काल्विन अस्पताल भिजवाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

पुलिस की शुरुआती जांच में सामने आया है कि सिराज और अयाज कई सालों से एक–दूसरे को जानते थे और लंबे समय तक साथ भी रहे थे। डीसीपी नगर मनीष कुमार शांडिल्य ने बताया कि आरोपी की तलाश में टीम लगाई गई है। अभी हत्या की वजह स्पष्ट नहीं हो सकी है, लेकिन सभी पहलुओं पर जांच की जा रही है। घटना के बाद इलाके में तरह–तरह की चर्चाएं हैं। कुछ लोगों का कहना है कि दोनों के बीच पैसे के लेनदेन को लेकर विवाद था, वहीं कुछ ने अवैध संबंध के एंगल की भी ओर इशारा किया है।

संक्षिप्त समाचार

बिहार के 115 यात्री फंसे,चुनाव में मतदान करने जा रहे थे, परिवहन विभाग ने ओवरलोड बस की सीज

लखनऊ, (संवाददाता)। लखनऊ में परिवहन विभाग की कार्रवाई के कारण मेरठ से बिहार जा रहे 115 मजदूर सरोजनी नगर में फंस गए हैं। विभाग ने शनिवार सुबह आगरा एक्सप्रेसवे पर क्षमता से अधिक सवारियां ले जा रही एक निजी बस को सीज कर दिया। हालांकि, यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई। यह घटना तब हुई जब हापुड़ स्थित अमन ट्रैवल्स की बस मेरठ से किशनगंज (बिहार) जा रही थी। बस में पुरुष, महिलाएं और बच्चों सहित कुल 115 यात्री सवार थे। परिवहन विभाग की टीम ने ओवरलोडिंग के चलते बस को रोककर सरोजनी नगर क्षेत्र के नादरगंज स्थित अमौसी रोडवेज वर्कशॉप में खड़ा करा दिया। बस का चालक संजय मौके से फरार हो गया और उसका मोबाइल फोन भी बंद है। यात्रियों ने बताया कि उन्होंने प्रति सवारी 1200 रुपए और सामान के लिए 300 रुपए अतिरिक्त किराया दिया था। इसके बावजूद उन्हें बीच रास्ते में उतार दिया गया। ये मजदूर मेरठ में काम करते हैं और 11 नवंबर को होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव में मतदान करने के लिए अपने घर लौट रहे थे। बस सीज होने के बाद से वे सुबह से भूखे-प्यासे भटक रहे हैं। परेशान मजदूरों ने पहले नादरगंज पुलिस चौकी और आरटीओ कार्यालय का चक्कर लगाया, लेकिन उन्हें कोई मदद नहीं मिली। अंततः वे बदालीखेड़ा पुलिस बूथ पहुंचे, जहां उपनिरीक्षक अजय कुमार ने जल्द समाधान का आश्वासन दिया। यात्रियों का कहना है कि उन्हें चालक की गलती का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब बस को सीज किया गया, तो परिवहन विभाग ने सवारियों की सुरक्षित यात्रा के लिए वैकल्पिक व्यवस्था क्यों नहीं की। विभाग की इस उदासीनता से यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

नर्सेज को गृह जनपद में मिलेगी पोस्टिंग,राजकीय नर्सेज संघ के अधिवेशन में डिप्टी सीएम ने दी मंजूरी

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में शनिवार को राजकीय नर्सेज संघ, उत्तर प्रदेश का 18 वां द्विवार्षिक प्रांतीय अधिवेशन मनाया गया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कार्यक्रम में सदस्य, विधान परिषद अवनीश कुमार सिंह, महानिदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य डॉ. रतनपाल सिंह, राजकीय नर्सेज संघ की अध्यक्ष शर्ली भंडारी, महामंत्री अशोक कुमार समेत प्रदेश के 75 जनपदों से आई नर्सेज ने हिस्सा लिया। अधिवेशन के दौरान नर्सेज संघ की ओर से डिप्टी सीएम को 13 सूत्री मांग पत्र सौंपा गया। इसमें प्रमुख मांग थी कि राज्य की नर्सों को उनके गृह जनपद में पोस्टिंग दी जाए। इस पर डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने तत्काल मोहर लगाते हुए स्वीकृति प्रदान की। इसके बाद पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा । संघ ने बृजेश पाठक का आभार व्यक्त किया। बृजेश पाठक ने अपने संबोधन में कहा कि नर्स को सिस्टर कहा जाता है क्योंकि उनमें अपार धैर्य और सेवा भावना होती है। डॉक्टर दवा देकर चले जाते हैं, लेकिन मरीज को स्वस्थ बनाकर घर तक पहुंचाने की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी नर्स ही निभाती हैं। नर्सेज हमारी स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ हैं और सरकार उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। कोरोना कल में भी नर्स ने महत्वपूर्ण योगदान देते हुए हर तरह के मरीज की सेवा किया। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र के बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाने के साथ-साथ नर्सों और पैरामेडिकल स्टाफ के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि नर्सों की अन्य मांगों पर भी गंभीरता से विचार किया जाएगा। साथी यह भी कहा कि अगर किसी भी नर्स को उनके कार्य स्थल पर किसी प्रकार की समस्या होती है तो तत्काल संपर्क करें। किसी प्रकार का शोषण होता है तो पत्र लिखें सूचना दें सभी नर्स हमारे परिवार की तरह है जिन्हें पूरा सहयोग मिलेगा । उन्होंने नर्सेज की कार्यशैली, समर्पण और सेवा भावना की सराहना किया।

लखनऊ से सहारनपुर की वंदे भारत एक्सप्रेस रवाना,सामान्य ट्रेन से 1 घंटा समय बचेगा

लखनऊ, (संवाददाता)। लखनऊ से सीधे सहारनपुर की वंदे भारत एक्सप्रेस लखनऊ जंक्शन (छोटी लाइन) से रवाना कर दी गई है। इसमें पहली बार यात्रा कराने के लिए स्टूडेंट्स को भी बैठाया गया। ट्रेन को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाराणसी से ट्रेन को वर्चुअली हरी झंडी दिखाई तो मौके पर मौजूद डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने भी रवाना किया। वंदे भारत में यात्रियों को चाय, ड्राई फ्रूट्स के साथ जूस भी मिलेगा। वहीं, इसकी स्पीड 110 किमी प्रति घंटे होगी। इससे सहारनपुर जाने में पहले के मुकाबले 1 घंटा समय बचेगा। इस ट्रेन के साथ ही बनारस,खजुराहो, फिरोजपुर,दिल्ली और एर्नाकुलम,बेंगलुरु वंदे भारत भी आज से शुरू हो गईं। लखनऊ-बनारस वंदे भारत के साथ ही लखनऊ से छूटने और लखनऊ से होकर गुजरने वाली ट्रेनों की संख्या 5 हो गई है। लखनऊ से बनने वाली वंदे भारत अब दो हो गई हैं। वहीं, यहां से 3 वंदे भारत पहले से ही गुजर रही हैं।

अरुण यादव बने परिवहन विभाग स्टेनोग्राफर्स संघ के प्रदेश अध्यक्ष

लखनऊ। उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग स्टेनोग्राफर्स संघ के प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव बनाए गए हैं। वह सर्वसम्मति से चुनाव जीते हैं। अरुण यादव वर्तमान में ट्रांसपोर्टनगर आरटीओ में तैनात हैं। उन्होंने बताया कि परिवहन विभाग मुख्यालय व क्षेत्रीय कार्यालयों में तैनात आशुलिपिकों, वैयक्तिक सहायकों ने चुनाव में हिस्सा लिया। उनके अतिरिक्त मेरठ आरटीओ में तैनात अनमोल कुमार प्रदेश महामंत्री, बरेली में तैनात सोईल खान प्रदेश उपाध्यक्ष, कौशाम्बी में तैनात मोहम्मद नसर हाशमी को प्रदेश सचिव एवं परिवहन आयुक्त कार्यालय में नियुक्त रविकांत प्रदेश कोषाध्यक्ष बनाए गए हैं। चुनाव शनिवार को संपन्न हुआ है।

लोकपाल समाज शेखर ने बिहार ब्लाक के गलगली ग्राम का किया निरीक्षण

ग्राम स्थित 147 वर्ष पुराने प्राचीन कुँवा व पीपल वृक्ष को ग्राम धरोहर के रूप में संरक्षित करने का ग्राम पंचायत को दिया सुझाव

प्रतापगढ़। लोकपाल मनरेगा व जिला भूगर्भ जल प्रबन्धन परिषद के नामित सदस्य समाज शेखर ने ग्राम पंचायत गल गली का भ्रमण कर मनरेगा कार्यो का स्थलीय निरीक्षण किया। ग्राम में स्थित प्राचीन कुँवा व पीपल बृक्ष को ग्राम के धरोहर के रूप में संरक्षित करने का सुझाव ग्राम पंचायत व ग्राम वासियों को दिया।

लोकपाल मनरेगा समाज शेखर ने प्राचीन कुंये के संबंध में ग्रामीणों से जानकारी ली। पता चला की कालाकांकर राजपरिवार द्वारा प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के अमर शहीद लाल प्रताप सिंह की 21 वीं पुण्य तिथि के अवसर पर बनाया गया था। लोगो ने बताया की उसी समय यह प्राचीन पीपल

का वृक्ष भी रोपित हुआ था। लोकपाल से ग्रामीणों ने इसके संरक्षण की मांग की जिस पर लोकपाल ने ग्रामीणों को बताया की यह ग्राम सभा की अमूल्य धरोहर है जो प्राचीन समृद्ध इतिहास को दर्शाता है। वहीं कुंये के भीतरी दिवाल पर एक शिलापट्ट भी मिला जिसका आशय भी यही प्रकट करता है। उन्होंने ग्राम पंचायत को 147 वर्ष पुराने इस प्राचीन प्राकृतिक संपदा को अक्षुण बनाये रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। लोकपाल ने प्राचीन कुँवा व बृक्ष को ग्राम धरोहर के रूप में संरक्षित व प्रबन्धन का सुझाव देते हुए स्थल के साफ सफाई व विकास कार्य कराये जाने का निर्देश दिया। ग्राम वासियों से भी इसके संरक्षण में भागीदारी की अपेक्षा की।

निरीक्षण के बाद लोकपाल ग्राम के संभ्रांत नागरिक पूर्व कानून गो सरोज कुमार मिश्र के यहाँ आयोजित श्री राम चरित्र मानस के अखण्ड पाठ में शामिल हुए। वहीं ग्राम स्थित नरसिंहिन देवी मंदिर का दर्शन पूजन किया। तदोपरांत अगली विजिट में ग्राम स्थित प्राचीन जल धारा (बारुठी) व मनरेगा के अमृत सरोवर का भ्रमण करने का वायदा किया।

इस अवसर पर ग्राम प्रधान जितेंद्र द्विवेदी, पत्रकार विजय यादव, भोले मिश्र, राम कुमार यादव आदि ग्रामीण उपास्थित रहे।

ग्रामीण नेतृत्व विकास कार्यक्रम (RLDP) के प्रथम चरण में अब तक एक हजार से अधिक लोग प्रशिक्षित

☐ प्रतापगढ़ सष्तीसरी सरकार अभियानष अंतर्गत षपंचपरमेश्वर विद्यापीठष के तत्वावधान में मिशन समृद्धि एवं इंडिया पंचायत फाउंडेशन के सहयोग से उत्तरप्रदेश प्रदेश के 20 जिलों में षग्रामीण नेतृत्व विकास कार्यक्रमष का आयोजन किया जा रहा है.

☐ इसके प्रथम फेज में 21 से 40 वर्ष के 2000 (प्रत्येक जिले में 100 की संख्या में) ऐसे व्यक्तिओं को जो नेतृत्व के बेसिक लक्षणों से युक्त तथा इसके लिए इच्छुक हैं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य तय किया गया है. इसके प्रथम फेज में अब तक एक हजार से अधिक लोगों का प्रारम्भिक प्रशिक्षण संपन्न होगया है.

☐ प्रथम फेज का यह प्रशिक्षण अपने लक्ष्य (2000) की प्राप्ति हेतु नवम्बर 25 के अंत तक संचालित किया जायेगा.

☐ प्रथम फेज के इस एक दिवसीय नेतृत्व प्रशिक्षण के अंतर्गत षनेतृत्व विकासष, षविकसित नेतृत्व का प्रभाव ष (व्यक्तिगत एवं परिवेशगत) तथा ष ग्रामीण व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों (सामाजिक, आर्थिक एवं लोकतान्त्रिक) में नेतृत्व के अवसरष बिषय को विशेष रूप से केंद्रित किया जा रहा है.

इसी के साथ प्रतिभागी सदस्यों को अपनी अभिरूचि के अनुरूप नेतृत्व के क्षेत्र का श्चयन करनेश तथा उसमें श्क्या करनेश तथा श्कैसे करनेश का समूहवार अभ्यास कराया जा रहा है.

☐ प्रशिक्षण के दूसरे फेज में प्रशिक्षर्थियों द्वारा अपनी अभिरूचि के अनुसार तय किये गए क्षेत्र से सम्बंधित बिषय पर प्रशिक्षित किया जायेगा.इसके अंतर्गत नेतृत्व विकास (विवेकवान नेतृत्व), डिजाइन थिंकिंग तथा पंचायतीराज के बारे में सभी प्रतिभागियों को समान रूप से प्रशिक्षित किया जायेगा.

☐ यह दूसरा फेज दिसंबर 2025 से प्रारम्भ होगा. इसका तीसरा व अंतिम फेज जो तीन माह का सर्टिफिकेट कोर्स होगा मिशन समृद्धि के सहयोग से पंचपरमेश्वर विद्यापीठ से सम्बध्य विश्वविद्यालयों के साथ संचालित होगा.

☐ अब तक हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के कुछ फोटोग्राफ मित्रों के अवलोकनार्थ नीचे पोस्ट है।

सरकार के मण्डल स्तरीय माटीकला पुरस्कार से सम्मानित हुए मूर्तिकार व शिल्पकार

कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा, तलत महमूद, डॉ. सौमिक नंदी एवं साधना गोस्वामी रहे निर्णायक

प्रयागराज। उ0 प्र0 माटीकला बोर्ड प्रयागराज के तत्वाधान में मण्डल स्तरीय माटीकला पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय आशीर्वाद गेस्ट हाउस जगराम चौराहा, कटरा-प्रयागराज में किया गया। पुरस्कार कार्यक्रम में प्रयागराज मण्डल के जनपदों, प्रयागराज, प्रतापगढ़, फतेहपुर व कौशाम्बी से प्रजापति समाज से जुड़े अनेकों मूर्तिकारों/शिल्पकारों द्वारा अपनी-अपनी स्वरचित कला कृतियों के साथ प्रतिभाग किया।

जिनमें उत्कृष्टता के आधार पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के रूप में निर्णायक मण्डल के प्रसिद्ध कलाकार रवीन्द्र नाथ कुशवाहा सदस्य राज्य ललित कला अकादमी

संस्कृति विभाग उ०प्र०, कलाकार तलत महमूद , मूर्तिकार डॉ. सौमिक नन्दी असि० प्रोफेसर इ. वि.वि.,साधना गोस्वामी कला अध्यापिका बेथनी कान्वेंन्ट द्वारा चयन किया गया। जिसमें प्रथम पुरस्कार जंगबहादुर प्रजापति प्रयागराज, द्वितीय पुरस्कार स्वेता प्रजापति प्रयागराज, तृतीय पुरस्कार धर्मेंद्र कुमार प्रजापति प्रतापगढ़ को क्रमशः 15000ध- 12000ध- 10000ध- की धनराशि तथा प्रमाण-पत्र, स्मृति-चिन्ह, अंग-वस्त्र प्रदान किया गया। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि व निर्णायक मंडल का माल्यार्पण व अंगवस्त्र से सम्मान हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरू प्रसाद मौर्य, मा0 विधायक फाफामऊ ने पुरस्कार प्रदान किया तथा उ0प्र0 सरकार द्वारा प्रजापति समाज के लोगों के जीवन स्तर के उत्थान हेतु उ0प्र0 माटीकला बोर्ड के गठन पर सरकार को धन्यवाद दिया और कहा कि माटीकला की योजनाओं का लाभ प्रजापति समाज के लोगों द्वारा अधिक से अधिक लिया जाये। इस अवसर पर सुनील कुमार, ओम प्रकाश मौर्य, नन्द लाल पटेल, महेंद्र कुशवाहा, विश्राम, अमित कुमार, राम लाल, दिनेश दूबे, आशीष यादव, अनुज उपाध्याय, राजेश पाडेय आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन राकेश मोहन गुप्ता, ज्येष्ठ लेखा परीक्षक परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग कार्यालय प्रयागराज द्वारा किया गया।

नगर निगम द्वारा प्रस्तावित साहित्य तीर्थ का भूमि पूजन आगामी 10 नवंबर को

प्रयागराज। साहित्यकारों के साथ विचार विमर्श के बाद

महापौर ने लिया निर्णय दिनांक 10 नवंबर 2025 को अरेल, नैनी, स्थित साहित्य तीर्थ का भूमि पूजन पूरी भव्यता के साथ दोपहर 1:00 बजे से प्रयागराज के गणमान्य साहित्यकारों के सानिध्य में किया जाएगा।

साहित्य तीर्थ भूमि पूजन के पूर्व आज नगर निगम कार्यालय के महापौर कक्ष में उपस्थित प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने माननीय महापौर श्री उमेश चंद गणेश केसरवानी जी को अपने-अपने मूल्यवान विचारों से अवगत कराया, जिसको महापौर जी ने साहित्य तीर्थ में अंकित करने और उसे विस्तृत भाव से बनाने का निर्णय लिया।

साहित्य तीर्थ की कल्पना को महापौर जी ने साहित्यकारों के बीच रखते हुए कहा कि प्रयागराज की प्राचीन धरोहरों एवं साहित्यिक परिकल्पना को साकार करने हेतु महर्षि वाल्मीकि से लेकर प्रयागराज से जुड़े प्रख्यात रचनाकारों की प्रतिमाएं और उनका संक्षिप्त परिचय सहित उनकी प्रतिमा को स्थापित कर अंकित किया जाएगा।

समय-समय पर साहित्यिक अनुष्ठान एवं वर्ष भर में एक बार भव्य आयोजन की कल्पना को भी मूर्ति रूप दिया जाएगा।

उन्होंने साहित्य तीर्थ के भूमि पूजन पर प्रयागराज के सभी साहित्यकारों एवं रचनाकारों को आह्वान किया कि उक्त पुनीत कार्य बढ़-चढ़कर का हिस्सा लें और प्रयागराज को पुनः साहित्यिक राजधानी बनाने में अपना अमूल्य योगदान दे।

महापौर जी द्वारा आयोजित विचार विमर्श गोष्ठी में डॉक्टर रवि नंदन सिंह, डॉ आभा मधुर श्रीवास्तव, संजय पुरुषार्थी, शैलेंद्र मधुर, श्लेष गौतम, जनकवि प्रकाश, प्रीता बाजपेई, जितेंद्र मिश्र जलज, अमित जौनपुरी, योगेश ओझा झमाझम, संतोष शुक्ला समर्थ, नजर पांडे, सहित अन्य रचनाकार एवं साहित्यकार गण मौजूद रहे।

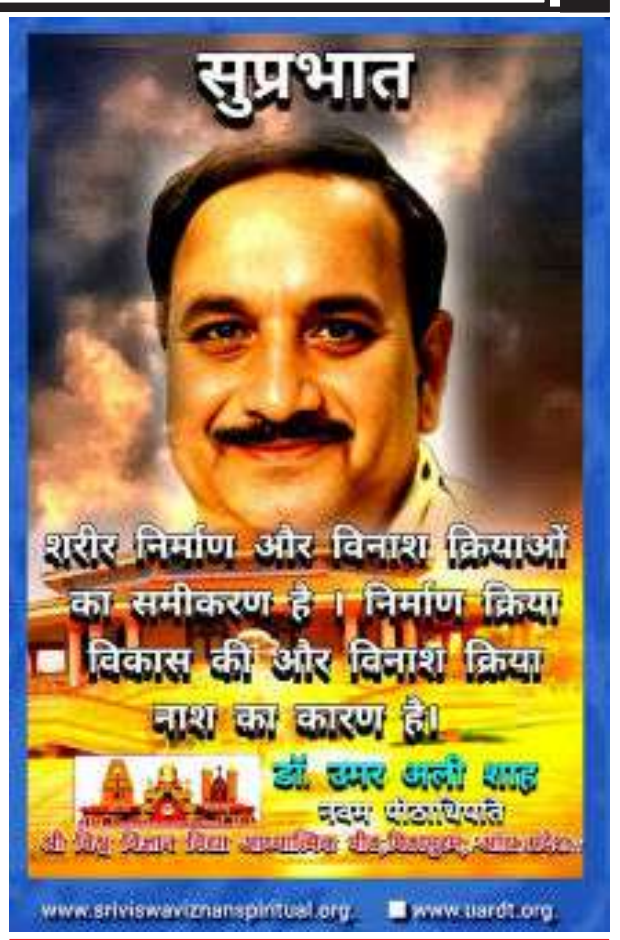

फूल बन प्यारा गेंदा

(कुण्डलिया)

कवियों की वाणी बने, कृषको की मुस्कान।
कहते हैं 'गेंदाश उसे, रखे सभी का ध्यान।
रखे सभी का ध्यान,गुणों का सागर बनके।
पीला लाल सफेद, पंखुड़ी मे रस भरके।
सुन लो कहें प्रदीप,प्रीति बनकर सखियों की।
खिलता है यह फूल,शब्द रचकर कवियों की।।

गेंदा प्यारा फूल है, मात्र नहीं संयोग।
खुशबू से अपने सदा, सबको रखे निरोग।
सबको रखे निरोग, रूप औषधि का धरकर।
जाता सबके पास, खुशी आँचल में भरकर।
सुन लो कहें प्रदीप, लगा चौतरफा मेला।
करे धर्म की बात, फूल बन प्यारा गेंदा।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

फ्रेशर पार्टी में डिग्री कॉलिज की छात्राओं ने हरियाणवी, राजस्थानी गीतों पर मचाया धमाल

महर्षि शुकदेव स्वामी कल्याण देव डिग्री कालेज में शनिवार को फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने हरियाणवी, राजस्थानी गीतों पर धमाल मचाया। इस दौरान छात्राओं ने फिल्मी गानों की धून पर रंग बिरंगी वेषभूषा में कैट वाक भी किया।

मुजफ्फरनगर जनपद के मोरना मे शुक्रताल मार्ग स्थित महर्षि शुकदेव स्वामी कल्याण देव डिग्री कॉलेज मे आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सचिव मदन पाल सिंह, विशिष्ट अतिथि सचिव वेदवीर सिंह, समाजसेवी विनोद शर्मा, प्राचार्य डा राजपाल सिंह मलिक ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। जिसके बाद छात्रा यीशु मलिक, काजल, कामेश्वरी ने पंजाबी गाने नचदी तेरी मां नाल गाने पर प्रस्तुति दी। छात्रा महिमा चौधरी ने मनोहारी कथक डांस किया। छात्रा रिया ने बोले चूड़ियां गाने पर पर नृत्य किया। छात्रा रिया, शिखा, रोशनी ने हास्यगीत से मनमोहक प्रस्तुति दी। इसके बाद फिल्मी गाने की धुन पर छात्रा यीशु मलिक सानिया रिया, खुशी ,अंजलि, नव्या, भावना, शालू ,काजल ,बुलबुल, आफरीन , अंजली, लक्ष्मी ने कैटवॉक किया। निर्णायक मंडल के आधार पर बीए में मिस फ्रेशर काजल यादव, एमए में मिस फ्रेशर प्रियांशी वर्मा चुनी गई जबकि मिस स्टाइलिस्ट यीशू मलिक व मिस अटेक्टीव सानिया मिर्जा रही। चेयररेस में तानिया प्रथम व बेलून में अभिषेक प्रथम रहे। संचालन प्रवक्ता मीनू चौधरी, नीता चौधरी ने किया। कार्यक्रम में प्रवक्ता नरेश कुमार,पूनम रोशवाल, कोमल चौधरी, आशुतोष अग्रवाल, दीपक चौधरी, राकेश शर्मा, रजनीश चौधरी, सपना शर्मा मौजूद रहे।

नवंबर में दिसंबर जैसी सर्दी का अहसास, कानपुर में नौ डिग्री पहुंचा पारा; इन शहरों के लिए अलर्ट हुआ जारी

लखनऊ। नवंबर के पहले सप्ताह में ही ठंड अपना रंग दिखाने लगी है। प्रदेश में अब दिन की धूप भले ही गर्माहट दे रही हो, लेकिन रातें तेजी से सिहरन भरी होती जा रही हैं। प्रदेश के अधिकांश जिलों में तड़के कोहरे की चादर दिखने लगी है। कानपुर शहर 9.2 डिग्री तापमान के साथ प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। वहीं इटावा में 9.6 और बुलंदशहर में 11 डिग्री न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। पछुआ हवाओं ने मौसम में ठंडक घोल दी है। रात के पारे में अच्छी खासी गिरावट देखने को मिली है। शुक्रवार को पूरब से पश्चिम तक मेरठ, मुजफ्फरनगर, बरेली, लखनऊ, कानपुर, हरदोई, वाराणसी और बाराबंकी सहित प्रदेश के 10 से ज्यादा जिलों में रात का तापमान 15 डिग्री या इसके आसपास दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह का कहना है कि आने वाले दो दिनों में दिन के अधिकतम तापमान में दो डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट दर्ज हो सकती है। साथ ही तराई और पूर्वांचल क्षेत्रों में अगले कुछ दिनों तक सुबह कोहरा देखने को मिलेगा। राजधानी में शुक्रवार को मौसम ने एकदम से करवट ली। बृहस्पतिवार और शुक्रवार के बीच की रात ठंडी पछुआ हवा चली और पारे में 5.3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट से अचानक सिहरन भरी ठंड शुरू हो गई। शाम में लोगों को गर्म कपड़ों और शॉल आदि की जरूरत महसूस हुई। शुक्रवार को तड़के सुबह शहर के बाहरी इलाकों में कोहरे का असर रहा। दिन में गुनगुनी धूप खिली और दिन के तापमान में 0.7 डिग्री की गिरावट आई। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि उत्तरी पछुआ हवाओं के जोर से शुक्रवार को न्यूनतम तापमान में पांच डिग्री से ज्यादा की गिरावट से एकदम से ठंड बढ़ी है।

सम्पादकीय.....

आत्मघात की मजबूरी

यह तथ्य हृदयविदारक ही है कि देश में एक साल के दौरान करीब चौदह हजार छात्रों ने आत्महत्या की। पहली नजर में आत्मघात के मूल में पढ़ाई का दबाव, छात्रों की संवेदनशीलता और तंत्र की नाकामी बताई जा सकती है। लेकिन सवाल है कि हमारा तंत्र क्यों संवेदनहीन बना हुआ है? यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को तलब करके इस बाबत विस्तृत विवरण मांगा है। साथ ही सवाल पूछा है कि क्या देश के सभी शिक्षण संस्थान छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जिम्मेदारी निभा रहे हैं? विडंबना यह है कि देश में मोटी पगार वाली नौकरियों की गलाकाट स्पर्धा में शिक्षण संस्थाएं व शिक्षक उस दायित्व को भूल गए हैं, जो छात्रों को विषयगत शिक्षा के साथ विषम परिस्थितियों के बीच जीवन जीने की कला सिखा सके। उन्हें व्यावहारिक जीवन का कौशल सिखाने के साथ ही चुनौतियों से जूझने की मानसिक शक्ति विकसित करने के लिए तैयार कर सकें। आखिर किसी परिवार की उम्मीद को किस स्थिति में यह सोचना पड़ता है कि मौत को गले लगाना अंतिम विकल्प है? शिक्षा परिसरों में ऐसी स्थितियां क्यों विकसित हो रही हैं कि विद्यार्थी जीवन से हार मानने लगे हैं? निस्संदेह, शिक्षण संस्थानों का एक मात्र लक्ष्य किताबी ज्ञान देकर डिग्री बांटने तक ही नहीं हो सकता। शिक्षण संस्थानों के प्रबंधन तंत्र को अपने परिसर में समता, ममता और सहजता का वातावरण तैयार करना होगा। जहां किसी भी तरह तनाव, मानसिक कष्ट व भेदभाव नजर न आए और कारगर शिकायत निवारण तंत्र विकसित हो। ऐसा न होने पर ही सरस्वती के मंदिरों में तनाव की फसल उग रही है। हमारे नीति–नियंता इस दुखदायी स्थिति पर अंकुश लगाने हेतु किसी तरह की गंभीर पहल करते नजर नहीं आते। यदि गाल बजाने वाले राजनेता कोई कदम उठाने की लोकलुभावनी घोषणा करते भी हैं तो भी जमीनी हकीकत बदलती नजर नहीं आती। घोषणाएं प्रभावी भी होनी चाहिए। सवाल यह भी है कि शैक्षणिक परिसरों में आत्महत्या रोकने के लिये जो कदम केंद्र व राज्य सरकारों को उठाने चाहिए थे, उसके बाबत देश की शीर्ष अदालत को क्यों पहल करनी चाहिए? इस मामले में सख्त रवैया अपनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय को कहना पड़ा कि केंद्र व राज्य सरकारें आठ सप्ताह के भीतर वह विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत करें, जो आत्महत्या रोकने के दिशा–निर्देशों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करे। दुखद स्थिति यह भी है कि देश में छात्रों के आत्मघात के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, इसकी पुष्टि खुद राष्ट्रीय अपराध रेकॉर्ड ब्यूरो भी कर रहा है। जो साल 2023 में देश की शिक्षण संस्थाओं में 13,892 छात्रों की मौत को गले लगाने की बात स्वीकार करता है। सबसे दुखद स्थिति यह है कि यह संख्या पिछले एक दशक में पैंसठ प्रतिशत बढ़ी है। वहीं इस आंकड़े की तुलना यदि वर्ष 2019 से करें तो यह वृद्धि चौंतीस फीसदी दर्ज की गई है। जाहिर बात है कि यह वृद्धि छात्रों की मानसिक पीड़ा, हताशा और भविष्य के प्रति निराश होने की स्थिति को ही दर्शाती है। निश्चित रूप से हमारी शिक्षा की विसंगतियां भी इन आत्महत्याओं के मूल में हैं। देश में भाषा व बोर्ड स्तर पर पाठ्यक्रम व शिक्षण की स्थिति में खासा अंतर है। पैसे वालों के बच्चे महंगे स्कूलों में पढ़ते हैं। रही–सही कसर उनके महंगे कोचिंग सेंटरों द्वारा पूरी की जाती है। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की सारी ऊर्जा अपने ज्ञान को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करने में चली जाती है। कालांतर में वे उच्च शिक्षा संस्थानों में हीनग्रंथि का शिकार हो जाते हैं। ऐसी तमाम ग्रंथियां छात्रों को अपराधबोध से भर देती हैं। पढ़ाई के दबाव के अलावा शिक्षा संस्थानों के परिसर में हिंसा और जातिगत भेदभाव की खबरें भी आती हैं जो संवेदनशील छात्रों को हताशा से भर देती हैं। निश्चय ही सजगता व संवेदनशीलता से ऐसी परिस्थितियों से छात्रों को बचाया सकता है। यही वजह है कि देश की शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में शिक्षण संस्थानों और सरकार को जरूरी दिशानिर्देश दिए हैं। निस्संदेह, देश के युवाओं में आत्मघात की प्रवृत्ति राष्ट्र की गंभीर क्षति है, जिसे संवेदनशील ढंग से दूर करने की तत्काल जरूरत है।

सेवा के संकल्प से क्रांति तक

डॉ. दीपक पाचपोर

इस दौरान उन्होंने पांच अनाथ बच्चों को गोद लिया और उनका पालन–पोषण किया। वर्ष 1912 में स्टोक्स ने ब्रिटिश अधिकारी श्रीमती बैट्स से चाय बागान खरीदा और वहीं पर मकान बनवाया, जिसका नाम उन्होंने अपने घर के नाम पर 'हारमनी हॉल' रखा।

अमेरिका के फिलाडेल्फिया में जन्मे सैमुअल इवांस स्टोक्स ने अपनी कर्मभूमि पहाड़ों को बनाया। वर्ष 1904 में उन्होंने मानवता की सेवा का संकल्प लेकर सुबाथू, जो तब अंग्रेजों की छावनी था, में कदम रखा। यहां अमेरिकन मिशनरियों द्वारा कुष्ठ रोग केंद्र स्थापित किया गया था, जहां उन्होंने डॉ. कार्लटन और उनकी पत्नी के साथ मिलकर कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों की न केवल मरहम पट्टी की, बल्कि उनका दिल भी जीता। स्टोक्स ने सुबाथू के निवासियों का दुरूख–दर्द समझा और उन्हें बेगार प्रथा से मुक्ति दिलाने में मदद की। उन्होंने उनकी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया और निरक्षता के कलंक को मिटाने के लिए काम किया। यह क्षेत्र पहले पंजाब प्रांत का हिस्सा था, लेकिन 1966 में हिमाचल प्रदेश के गठन के बाद यह हिमाचल का हिस्सा बन गया। सोलन जिला आज भी गर्व करता है कि पहाड़ों में व्यावसायिक सेब क्रांति के जनक सैम्यूल इवान स्टोक्स के कदम यहीं पड़े थे। सैमुअल इवांस स्टोक्स का जन्म 16 अगस्त, 1882 को फिलाडेल्फिया, अमेरिका में हुआ। उनका पालन–पोषण एक धनाढ्य परिवार में हुआ, लेकिन उन्होंने मानवता की सेवा और पहाड़ों में गरीबी, सुविधाओं के अभाव में जीवनयापन कर रहे लोगों के जीवन में सुधार लाने का बीड़ा उठाया। सुबाथू के कुष्ठ रोग केंद्र में रहते हुए स्टोक्स ने कुष्ठ रोगियों की सेवा की और उन्हें सशक्त बनाया। वर्ष 1904 में उन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए कोटगढ़ भेजा गया, जो तब अंग्रेजों के अधीन था। यहां अंग्रेजों ने एंग्लो–गोरखा युद्ध के बाद छावनी स्थापित की थी। इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को देखकर महान लेखक व कवि रूडयार्ड किपलिंग ने इसे पहाड़ों की स्वामिनी कहा था। स्टोक्स ने यहां आकर ईसाई धर्म का प्रचार किया, और सरदार सुंदर सिंह के साथ मिलकर गांव–गांव जाकर धर्म का प्रसार किया। इसी दौरान कोटगढ़ में अंग्रेजों द्वारा चाय की खेती शुरू की गई थी। वर्ष 1905 में कांगड़ा में भीषण भूकंप आया। स्टोक्स ने कोटगढ़ से लाहौर जाकर राहत कार्यों में ब्रिटिश सरकार की सहायता की। वह तत्कालीन राहत एवं पुनर्वास अधिकारी बने और तीन माह तक राहत कार्य करते रहे। उनके द्वारा किए गए कार्यों की ब्रिटिश सरकार ने सराहना की। कांगड़ा में राहत कार्य के दौरान स्टोक्स बीमार हो गए और स्वास्थ्य लाभ के लिए कोटगढ़ लौटे। उन्होंने यहां एक एकांत गुफा में निवास किया और लोगों को अपने विचारों से प्रभावित किया। इस दौरान उन्होंने पांच अनाथ बच्चों को गोद लिया और उनका पालन–पोषण किया। वर्ष 1912 में स्टोक्स ने ब्रिटिश अधिकारी श्रीमती बैट्स से चाय बागान खरीदा और वहीं पर मकान बनवाया, जिसका नाम उन्होंने अपने घर के नाम पर 'हारमनी हॉल' रखा। उन्होंने स्थानीय ईसाई लड़की से विवाह किया और अमेरिका से सेब के पौधे और उत्तम किस्म के बीज लेकर आए। उन्होंने उन्हें अपने बाग में रोपित किया, और यहीं से पहाड़ों में व्यावसायिक सेब की खेती की नींव पड़ी। पहाड़ों में सेब की खेती से पहले कुल्लू, नग्गर, शिमला और मशोबरा में कुछ बाग लगाए गए थे, लेकिन ये अधिकतर छोटी किस्म के थे। स्टोक्स ने रसदार सेब की किस्में रोपित की और इससे एक नई शुरुआत की। उनके प्रयासों से कोटगढ़ में सेब की खेती ने पूरे क्षेत्र को समृद्ध किया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान स्टोक्स ने ब्रिटिश सरकार के अधीन भर्ती अधिकारी के रूप में कार्य किया। उन्होंने अपने घर में युवकों के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोला, जिसकी सराहना की गई। कोटगढ़ में रहते हुए स्टोक्स ने बेगार प्रथा का विरोध किया और इसे समाप्त करने के लिए अभियान चलाया। इस आंदोलन में उन्होंने महात्मा गांधी के सिद्धांतों को अपनाया और स्थानीय लोगों को प्रेरित किया। उनके प्रयासों से बेगार प्रथा समाप्त हुई। स्टोक्स जलियांवाला बाग हत्याकांड से बहुत दुखी हुए और उन्होंने इस घटना की कड़ी आलोचना की। वर्ष 1920 में उन्होंने नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन में भाग लिया, जहां उन्होंने ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का विरोध किया। स्टोक्स वर्ष 1921 में पंजाब प्रांत के दौरे के दौरान अमृतसर के बाघा बार्डर अंग्रेजों द्वारा स्टोक्स को प्रांत की शांति भंग करने और उसके द्वारा 'द ट्रिब्यून' में लिखे तीन लेख के कारण हिरासत में लिया गया। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किसी अमेरिकन की पहली गिरफ्तारी थी। उन्हें छह माह की सजा दी गई, लेकिन बाद में उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया और सामाजिक–आर्थिक कार्यों में जुट गए। वर्ष 1923 में स्टोक्स ने कोटगढ़ में तारा स्कूल की स्थापना की।

, जिसका नाम उन्होंने अपने दिवंगत बेटे ताराचंद के नाम पर रखा। उन्होंने स्थानीय लोगों को सेब के पौधे और बीज उपलब्ध कराए, और धीरे–धीरे सेब की खेती ने क्षेत्र में समृद्धि ला दी। आज की पीढ़ी भले ही स्टोक्स के योगदान को भूल गई हो, लेकिन उन्होंने हिमाचल प्रदेश में एक आर्थिक क्रांति की नींव रखी। सोलन में स्थित डॉ. वाईएस परमार बागबानी एव वानिकी विश्वविद्यालय और सत्यानंद स्टोक्स लाइब्रेरी उनके योगदान को याद करती है।

वर्ष 1932 में स्टोक्स ने हिंदू धर्म स्वीकार किया और सैम्यूल से सत्यानंद बन गए। उन्होंने 1937 में थानाधार मंदिर का निर्माण भी करवाया। उन्होंने भारतीय दर्शन और संस्कृति को अपनाया और भारतीय रंग में रंग गए।

क्या हमें लोकपाल की जरूरत है

जूलियो रिबैरो

लोकपाल और उनकी 7 सदस्यीय टीम ने अपने इस्तेमाल के लिए 7 बी.एम. डब्ल्यू. कारों की मांग की है। इस मांग से आम जनता में काफी खलबली मच गई। हालांकि इस मांग को लेकर हैरान होने की कोई बात नहीं थी। यही तो सभी नियुक्तियों की अपेक्षा होती है और ऐसा क्यों है, इस पर इस लेख में आगे चर्चा की जाएगी। आलोचकों को सबसे बड़ा सवाल यह पूछना चाहिए कि वे खुद लोकपाल से क्या हासिल करने की उम्मीद करते थे? बेचारे अन्ना हजारे जो धर्मयुद्ध के लिए संघर्षरत हो गए थे उम्मीद करते थे कि अगर लोकपाल भ्रष्टाचारियों पर शिकंजा कसता रहा तो भ्रष्टाचार पूरी तरह से खत्म नहीं तो कम से कम कम जरूर हो जाएगा! जिन लोगों ने अन्ना को इस तरह के समाधान की मांग करने के लिए प्रेरित किया जैसे अरविंद केजरीवाल और किरण बेदी, वे खुद नौकरशाह थे जिन्हें बेहतर जानकारी होनी चाहिए थी। हजारे और वह आम आदमी जिसकी उन्हें परवाह है, चाहते हैं कि छोटे–मोटे भ्रष्टाचार से लड़ा जाए, जिसकी उन्हें रोजाना जरूरत होती है। कोई भी लोकपाल ऐसा नहीं कर पाएगा! मेरे मित्र और एन.जी.ओ. पब्लिक कंसर्न फॉर गवर्नेंस ट्रस्ट (पी.सी.जी.टी.) में मेरे सहयोगी, रंगा राव, आई.बी. (इंटैलीजैंस ब्यूरो) में पुराने जानकार हैं। भ्रष्टाचार से लडना उनके निजी एजैंडे का एक अहम हिस्सा है। जब मैंने उनसे कहा कि अगर लोकपाल की मांग मान ली गई तो निराशा ही हाथ लगेगी तो उन्होंने अविश्वास से मेरी तरफ देखा। अब वे मानते हैं कि मैं सही था। लोकपाल के रूप में एक संभावित धर्मयोद्धा का चयन पहली बड़ी बाधा है। एक न्यायाधीश, जिन्हें मैं जानता था इस पद के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे। बॉम्बे उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी जो मेरे सेवाकाल में इस पीठ की शोभा बढ़ा चुके थे, ऐसे ही एक धर्मयोद्धा थे। जब मैं रोमानिया में 4 साल बिताने के बाद मुंबई लौटा तो उस नेक न्यायाधीश ने मुझे फोन किया और अपने आवास पर मिलने के लिए आमंत्रित किया, मैं गया। वह वरिष्ठ स्तर के भ्रष्ट पुलिस अधिकारियों और उच्च न्यायालय के भ्रष्ट न्यायाधीशों का सीधा सामना करना चाहते थे ताकि आपराधिक न्याय प्रणाली कम से कम लोगों को ज्यादा स्वीकार्य हो सके। उन्होंने सुझाव दिया कि मैं हर अडियल आई.पी.एस. अधिकारी को फोन करूं और उनसे अपनी क्षमता के अनुसार काम करने का अनुरोध करूं। वह भी अपनी ओर से उनके साथ यही रास्ता अपनाएंगे!

मैंने जवाब दिया कि मैं अपने कई पूर्व सहयोगियों के बीच पहले से ही अलोकप्रिय हूं और मैं नहीं चाहता कि वे सिर्फ मेरी सराहना में सिर हिलाना बंद कर दें। लेकिन न्यायमूर्ति धर्माधिकारी जल्दी हार मानने वाले नहीं थे। उन्होंने सिटी सिविल एवं सत्र न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश अग्नियार (जो बाद में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने) से संपर्क किया और मुंबई के सभी सत्र न्यायाधीशों की एक बैठक आयोजित करने में सफल रहे, जिसे न्यायमूर्ति धर्माधिकारी और मैंने संबोधित किया। धर्मयोद्धा जैसा साहस न होने के कारण, मैं पुलिस प्रमुख से आई.पी.एस. अधिकारियों की ऐसी ही एक बैठक आयोजित करने के लिए कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया! आज दिल्ली में केंद्र सरकार के मुखिया के रूप में 2 ऐसे नेता हैं जो अपनी अदम्य शक्ति का परिचय देते हैं। दोनों गुजरात से हैं, जैसे महात्मा गांधी और सरदार वल्लभभाई पटेल, दोनों राष्ट्रीय नेता हैं जिन्हें सभी अच्छे भारतीय आदर्श मानते हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह उच्च पदों के लिए सभी चयन करते हैं जैसा कि उन्होंने हाल ही में केंद्रीय चुनाव आयुक्तों के साथ किया था। विपक्ष के नेता को 2–1 से हराया गया। सत्तारूढ़ दल के दूसरे मंत्री के स्थान पर मुख्य न्यायाधीश को तटस्थ व्यक्ति के रूप में नियुक्त करने का एक समझदारी भरा सुझाव भी सिरे से खारिज कर दिया गया। न्याय और निष्पक्षता की परवाह करने वालों में यह प्रबल भावना है कि प्रवर्तन अधिकारी केवल आलोचकों और विरोधियों को ही निशाना बना रहे हैं। उच्च पदों के लिए चुने गए अधिकारी और सेवानिवृत्ति के बाद नियुक्त किए जाने वाले न्यायाधीश उन लोगों में से चुने जाएंगे जो वैचारिक विभाजन को नहीं बिगाड़ेंगे,भले ही वे व्यक्तिगत रूप से किसी विचारधारा को न मानते हों। राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में, एक धर्म योद्धा को छोड़ कर कोई भी लोकपाल अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से जगी उम्मीदों को पूरा नहीं कर पाएगा। लोकपाल की व्यवस्था में 7 पदों का सृजन बिना किसी ठोस पारस्परिक लाभ के केवल राजकोष पर बोझ होगा । यदि राजनीति दिल से चाहती थी कि वह भ्रष्टाचार के उस खतरे से लड़े जिसने अन्ना के नेतृत्व वाले भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनकारियों को परेशान किया था तो उसे आर.टी.आई. (सूचना का अधिकार) प्रशासन और आर.टी.एस. (सेवा का अधिकार) को मजबूत करना चाहिए था जो महाराष्ट्र सरकार द्वारा बनाया गया एक अधिनियम है जो अधिकारियों को आम नागरिकों से जुड़े मामलों का समयबद्ध तरीके से निपटारा करने के लिए बाध्य करता है। हैरानी की बात है कि जिन अधिकारियों को निर्धारित समय–सीमा में लंबित फाइलों का निपटारा करना होता है, उन्हें भी यह नहीं पता कि ऐसा अधिनियम पिछले कुछ वर्षों से कानून की किताब में है। इस अधिनियम में दंडात्मक धाराओं को स्पष्ट रूप से पारिभाषित नहीं किया गया है जैसा कि आर.टी.आई. अधिनियम में निदष्ट किया गया है। लेकिन शीर्ष स्तर के सभी पद भरे जा चुके हैं! न्यायालयों में लंबित मुकद्दमों के ढेर को निपटाने के लिए न्यायाधीशों को पुनरू नियुक्त करने का वर्तमान में एक बड़ा अवसर है। सेवानिवृत्त होने वाले न्यायाधीशों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के आधार पर उन्हें 75 वर्ष की आयु तक 5 वर्षों के लिए पुनरू नियुक्त किया जा सकता है और उन्हें लंबित मुकद्दमों को निपटाने का स्पष्ट आदेश दिया जाए।

लोग इस खर्च पर कोई आपत्ति नहीं करेंगे क्योंकि न्यायालयों में लंबित मुकद्दमों को कम करना कानून के शासन को बनाए रखने में प्राथमिक चिंता का विषय है। हमारा ध्यान आपराधिक मामलों पर होना चाहिए क्योंकि विचाराधीन कैदी वर्षों से जेलों में सड़ रहे हैं। यह न्यायशास्त्र के सभी सिद्धांतों के विरुद्ध है।

धीमी मौत मिल रही है, कोई जिम्मेदार नहीं

एजेन्सी

पिछले महीने तक जो लोग इस बात की खुशियां मना रहे थे कि सुप्रीम कोर्ट ने ग्रीन पटाखे जलाने की अनुमति देकर हिंदू धर्म की लाज रख ली, अब वही लोग हांफ रहे हैं, सांस लेने में तकलीफ महसूस कर रहे हैं, नजला–जुकाम का शिकार हो रहे हैं। और वही लोग क्यों इस समय राजधानी दिल्ली गैस चेंबर में तब्दील हो चुकी है, लिहाजा सारे लोग ही इन तमाम बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। बल्कि जानकारों का कहना है कि वायु प्रदूषण केवल सांस संबंधी तकलीफें नहीं देता, इंसान के फेफड़ों, हृदय, गुर्दे सबको क्षतिग्रस्त कर रहा है। मधुमेह, रक्तचाप जैसी बीमारियां जो पहले वंशानुगत या अनियमित जीवनशैली के कारण हुआ करती थीं, अब उसमें भी वायुप्रदूषण ने ही जिम्मेदारी ले ली है। अगर कहा जाए कि वायु प्रदूषण सभी को धीमी मौत दे रहा है, तो गलत नहीं होगा। वैसे भी कई अध्ययनों में कहा गया है कि दिल्ली में रहने वाले लोगों की उम्र 10 साल कम हो रही है, क्योंकि उन पर खराब हवा का असर हो रहा है। हालांकि दिल्ली ही क्या देश के दूसरे राज्यों में भी ऐसे ही अध्ययन हों तो नतीजों में ज्यादा अंतर नहीं आएगा। दिल्ली का वायुप्रदूषण इसलिए चर्चा में आ जाता है क्योंकि देश की राजधानी है तो खबरों में बनी ही रहती है। ऊपर से धुंध और धुएं की जो मोटी चादर यहां के आसमान को ढंक लेती है, वह फौरन दिख जाती है। दूसरे शहरों में जहरीली धुंध नहीं होती, लेकिन वायु में दूसरे हानिकारक तत्व मिले ही होते हैं। बहरहाल, दिल्ली का वायु प्रदूषण इस साल राजनैतिक कारणों से भी चर्चा में है। पिछले साल तक यहां आम आदमी पार्टी की सरकार थी, लिहाजा भाजपा के लिए इसके खिलाफ आवाज उठाना आसान था, यह राजनैतिक मजबूरी भी थी। दिल्ली के साथ लगे हाथ पंजाब सरकार को भी भाजपा निशाने पर लेती थी, क्योंकि वहां भी आप की सरकार है और पराली जलाने को प्रदूषण का बड़ा कारक माना जाता है। लेकिन अब दिल्ली में रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री हैं, जो प्रधानमंत्री मोदी की तरह काम करने से अधिक फोटो खिंचवाने या चुनाव प्रचार में व्यस्त रहती हैं। कुछ समय पहले रेखा गुप्ता की हाथ में झाड़ू वाली तस्वीर आई थी, जिसे अलग–अलग एंगल से कैमरामेन कवर कर रहे थे। रेखा गुप्ता ने यमुना साफ करने का वादा भी चुनावों में किया था और उसके बाद छठ पूजा के समय बताया कि यमुना नदी साफ हो चुकी है। लेकिन असल में गंदगी वाले झाग को दबाने के लिए उस पर रसायन का छिड़काव हुआ था। इसलिए प्रधानमंत्री की छठपूजा के लिए साफ पानी का अलग तालाब उन्होंने बनवाया, जिसका पर्दाफाश आम आदमी पार्टी ने किया तो फिर प्रधानमंत्री छठ पूजा के लिए ही नहीं आए। इसका भरपूर रोना उन्होंने बिहार चुनावों में रोया। रेखा गुप्ता भी बिहार में कई बार चुनाव प्रचार के लिए पहुंची। इस बीच दिल्ली हांफती रही।अब रेखा गुप्ता ने प्रशासनिक सख्ती का ऐलान किया है कि प्रदूषण को रोकने में कोई ढिलाई न बरती जाए। लेकिन यह आग लगने पर कुआं खोदने वाली बात है। दिल्ली में पहली बार वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 के पार नहीं पहुंचा। पहली बार खतरनाक स्तर पर प्रदूषण की खबरें नहीं आई हैं। यह सालों साल से पेश आ रही समस्या है। अमीरों के लिए इसका समाधान एयर प्यूरीफायर के तौर पर मौजूद है। जैसे अमीरों ने पहले नदी–तालाबों को गंदा करके या उनका दोहन करके गरीबों के लिए मटमैला पानी और अपने लिए वॉटर प्यूरीफायर की व्यवस्था कर ली, वही रवैया अब हवा के साथ अपनाया जा रहा है। भले ही स्वच्छ हवा और पानी या सांस लेने का अधिकार मानवाधिकारों के दायरे में आए। लेकिन मौजूदा भारत में अमीरों ने तय कर लिया है कि साफ पानी और हवा पर केवल उनका अधिकार है, गरीबों के लिए यह सब उपलब्ध है या नहीं, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। सरकार भी अमीरों के हिसाब से ही नीतियां बनाती हैं। भले ही मतदान के दिन गरीब लाइन में लगकर वोट डाले कि उसके लिए भी अच्छे दिन आएंगे। मगर उसे क्या पता कि अच्छे दिनों का वादा भी केवल अमीरों के लिए ही है।डॉक्टरों की सलाह मानकर मास्क पहनना, घर पर ही रहना, ऑनलाइन क्लास या वर्क फ्रम होम की सुविधा लेना, यह भी समाज का उच्चस्तरीय तबका ही निभा सकता है। गरीबों के लिए तो घर से बाहर रहने की मजबूरी हमेशा रहेगी। वे अपने खोमचे का सामान ऑनलाइन नहीं बेच सकते। न अपने बच्चों को कम्प्यूटर, मोबाइल दे सकते हैं कि वे घर से शिक्षा हासिल करें। मजदूरी के लिए, दूसरों के घरों में काम करने के लिए, सड़क किनारे सब्जी–फल, खाने–पीने की दुकान लगाने के लिए उन्हें पूरे दिन घर से बाहर रहना ही पड़ेगा। इसमें वे 400 एक्यूआई में सांस ले रहे हैं या 200 एक्यूआई में, कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि उन गरीबों को इसके अलावा गाड़ियों का धुआं, सड़क की धूल–मिट्टी सब फांकनी पड़ती है। इसमें उन्हें कोई गंभीर बीमारी हो भी रही होगी तो उसका पता लगाने या इलाज करवाने के लिए वे अस्पतालों में नहीं जा सकते। क्योंकि सरकारी अस्पतालों में जरूरत से ज्यादा भीड़ होती है और निजी अस्पतालों में इलाज महंगा होता है। ऐसे में जब एम्स जैसे अस्पताल से एडवायजरी जारी होती है कि लोग घर पर रहे, कसरत के लिए बाहर न निकलें और संभव हो तो एयर प्यूरीफायर लगाएं तो लगता है कि कोई जले पर नमक छिड़क रहा है। क्या सरकार की तरह एम्स के डॉक्टर भी अब यह मान रहे हैं कि दिल्ली में केवल अमीरों को रहना चाहिए। और मान लें कि अमीर ये सारे उपाय कर लेते हैं, क्या तब भी वायु प्रदूषण से बचने की कोई गारंटी है। क्योंकि अब तक ऐसा कोई एयर प्यूरीफायर तो शायद बना नहीं है, जो कांगड़ी की तरह छाती पर लटकाया जा सके। कुछ वक्त में जब धुंध छंट जाएगी, तब वायु प्रदूषण पर हाय–हाय भी रुक जाएगी। लेकिन फिर कुछ वक्त में गर्मी आएगी और तब लू के थपेड़ों में गरीबों की जान जाएगी। उसमें जो बच जाएंगे, वो बरसात की अव्यवस्था का शिकार होंगे। सड़कों पर लंबा जाम तो बारिश में लगता ही है, उसके अलावा बाढ़, भूस्खलन, कच्चे मकानों का गिरना, करंट लगना ये सारी घटनाएं बढ़ जाती हैं। इनमें भी गरीब ही सबसे अधिक मरते हैं। इन खबरों को छिपाने का सबसे आसान उपाय है देश के सामने अपनी सुंदर छवियों को प्रस्तुत किया जाए, प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता यही कर रहे हैं। बाकी सब चंगा सी।

स्क्रिप्ट से समझौता नहीं करती
यामी गौतम

यामी गौतम की आने वाली फिल्म श्हकश 1970 के दशक की उस सच्ची घटना से प्रेरित है, जब मुस्लिम महिला शाह बानो बेगम ने अपने हक और इंसाफ के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। खास बातचीत में यामी ने बताया कि हक उनके लिए सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि एक एहसास है। एक ऐसी औरत की आवाज, जिसने अपने हक के लिए लड़ने की हिम्मत दिखाई। बातचीत में यामी ने अपने किरदार के सफर, अपने काम के नजरिए और एक मां के रूप में बदली जिंदगी पर खुलकर बात की। हक सुनते ही एक गहराई वाला एहसास होता है। आपके लिए यह फिल्म क्या मायने रखती है? हक मेरे लिए सिर्फ एक फिल्म नहीं है, यह दिल से जुड़ा हुआ अनुभव है। इसमें दो लोग हैं, जो एक रिश्ते में बंधे हैं, जहां प्यार है, भरोसा है और कहीं न कहीं दर्द भी है। जब हम किसी से नाराज होते हैं या किसी रिश्ते में कोई बात अधूरी रह जाती है, तो सबसे पहले ख्याल आता है कि इतना तो मेरा हक बनता है। यही इस फिल्म की भावना है। जहां रिश्ता होता है, वहां उम्मीद होती है और जहां उम्मीद होती है, वहीं हक होता है। इसलिए मुझे यह टाइटल बहुत सटीक लगा क्योंकि यह अपने आप में पूरी कहानी कह देता है। इस किरदार को निभाना कितना मुश्किल था? यह किरदार निभाना आसान नहीं था। यह सिर्फ एक महिला की नहीं, बल्कि कई महिलाओं की कहानी है। कई बार लगता है कि हम किरदार को निभा रहे हैं, लेकिन धीरे–धीरे वही किरदार हमें बदल देता है। मैंने स्क्रिप्ट कई बार पढ़ी, क्योंकि हर बार उसमें कुछ नया महसूस होता था। कभी कोई खामोशी अलग लगती थी, कभी कोई बात और गहराई से समझ में आती थी। रात के दो बजे भी अगर कोई ख्याल आता था तो मैं उसे लिख लेती थी या वॉइस नोट बना लेती थी। डायरेक्टर को सुबह मेरे मैसेज मिलते थे और वो मुस्कुराकर कहते थे, श्ये रात में क्या लिखा आपने?श और मैं कहती थी, 'पता नहीं, बस दिल से निकला।' यह किरदार उतना ही कोमल है जितना मजबूत। उसने मुझे सिखाया कि हक लेना सिर्फ बोलने से नहीं, बल्कि उसे महसूस करने और समझने से आता है। इतनी सच्ची कहानी को पर्दे पर लाना कितना चुनौतीपूर्ण था? बहुत चुनौतीपूर्ण था। हमने शुरुआत से ही तय किया था कि हक किसी पर आरोप लगाने या किसी को गलत साबित करने की कहानी नहीं होगी। यह एक इंसान की यात्रा है और इसे सम्मान के साथ दिखाना जरूरी था। यह कोई बायोपिक नहीं है, लेकिन यह सच्ची भावनाओं से प्रेरित है। फिल्म में कुछ सच्चाई है, कुछ कल्पना है। हमने दोनों के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश की है ताकि कहानी ईमानदार लगे। हमारी कोशिश थी कि फिल्म का हर पल सच्चा महसूस हो। आपने अपने प्रोसेस की बात की कि आपको लिखना और अपने विचार साझा करना पसंद है। क्या यह आदत हाल ही में शुरू हुई या हमेशा से रही है? यह आदत हमेशा से रही है। शायद 'विकी डोनर' के समय से ही। लिखना मेरे लिए सिर्फ एक आदत नहीं है, बल्कि सोच को साफ करने का तरीका है। जब आप लिखते हैं, तो कई बार वो बातें बाहर आ जाती हैं जो शायद आप जुबान से कह नहीं पाते। बीच–बीच में कुछ फिल्में ऐसी भी थीं जहां दिल से थोड़ी दुविधा थी कि करना चाहिए या नहीं, लेकिन उस समय के हिसाब से जो सही लगा, वही किया। पर जितनी भी फिल्में ऐसी रही हैं जिन्हें लोगों ने पसंद किया या जिन पर मुझे खुद गर्व है ...'काबिल', 'उरी', 'बाला', 'थर्स डे', 'धूमधाम', 'लॉस्ट', 'आर्टिकल 370' या अब 'हक' उन सब में मेरा यही प्रोसेस रहा है। मैं स्क्रिप्ट बार–बार पढ़ती हूं, नोट्स बनाती हूं, कभी–कभी अपने विचार डायरेक्टर के साथ साझा करती हूं। अगर रात में भी कोई ख्याल आता है तो उसे तुरंत लिख लेती हूं या रिकॉर्ड कर लेती हूं ताकि वो कहीं खो न जाए। मेरे लिए ये तैयारी का नहीं, बल्कि किरदार के साथ एक रिश्ता बनाने का हिस्सा है। अगर हक को एक वाक्य में समेटना हो तो वो क्या होगा? हक मेरे लिए आत्मस्वीकृति की कहानी है। यह सिर्फ एक महिला की नहीं, बल्कि हर उस इंसान की कहानी है जिसने कभी अपने दिल में कोई सच्चाई महसूस की और उसे कहने की हिम्मत जुटाई। यह फिल्म मेरे लिए खुद को पहचानने और अपनी आवाज को महसूस करने की यात्रा है। यामी गौतम ने अमर उजाला के साथ बातचीत में अपनी फिल्म श्हकश को लेकर कई बातें साझा कीं। यह फिल्म 1970 के दशक की उस सच्ची घटना से प्रेरित है, जब मुस्लिम महिला शाह बानो बेगम ने अपने हक और इंसाफ के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। इसके अलावा अपनी निजी जिंदगी पर भी अभिनेत्री चर्चा करती दिखीं। उन्होंने बताया कि बेटे वेदविद के बाद जिंदगी कितनी और किस तरह बदली है? अगर आप अपने सफर को पीछे मुड़कर देखें, तो यामी गौतम में क्या बदलाव आया है? मुझे लगता है कि खुद को लेकर मैं अब ज्यादा सहज हो गई हूं। पहले मैं बहुत जल्दी में रहती थी। बस काम चाहिए होता था, कुछ करते रहना है। अब चीजों को समझकर, महसूस करके फैसला लेती हूं। अब मेरे लिए सिर्फ काम करना मायने नहीं रखता, बल्कि अच्छा और सच्चा काम करना मायने रखता है। मुझे नहीं लगता कि मैं बहुत सोचती हूं, लेकिन हां, अब मेरा झुकाव सिर्फ अच्छी कहानियों की तरफ है। पहले स्क्रिप्ट ढूंढती थी, अब स्क्रिप्ट खुद मुझ तक आती हैं, और मैं कोशिश करती हूं कि सिर्फ वही प्रोजेक्ट करूं जिसमें मेरा मन लगे। मैं अब अपने काम और दर्शकों को कभी हल्के में नहीं लेती। मुझे नहीं पता आगे क्या होगा, लेकिन इतना जरूर जानती हूं कि मेहनत और सच्चाई कभी बेकार नहीं जाती। मुझे बस अपना काम करना आता है, और वो पूरी ईमानदारी से करना है। हर दिन सीखने की कोशिश करती हूं और यही इवोल्यूशन मेरे लिए सबसे बड़ी बात है ... एक बेहतर इंसान और कलाकार बनना। क्या कभी ऐसा समय आया जब आपको अपने हक के लिए खड़ा होना पड़ा? मैं यह नहीं कहूंगी कि मैंने किसी से लड़ाई की, लेकिन हां, अपने हक के लिए हमेशा खड़ी रही हूं। जैसा कि मैंने कहा, मैं वही फिल्में करती हूं जिनमें दिल से यकीन हो और जिन लोगों के साथ काम करती हूं, उनका काम के प्रति नजरिया भी मेरे जैसा हो। मेरे लिए सबसे अहम चीज स्क्रिप्ट है। कई बार ऐसा होता है कि स्क्रिप्ट तुरंत नहीं मिलती या किसी बड़े नाम के साथ काम करने का मौका होता है, लेकिन मैं साफ कह देती हूं कि पहले स्क्रिप्ट चाहिए। मेरे सारे सवालों के जवाब स्क्रिप्ट में ही होते हैं। मैंने अपने आप से एक वादा किया है कि मैं कभी समझौता नहीं करूंगी। अगर कहानी और किरदार ईमानदार हैं, तभी मैं जुड़ूंगी। मेरे लिए यह मेरा असली हक है। एक कलाकार के तौर पर अपनी बात पर टिके रहना और अपने फैसले खुद लेना। क्या कभी लगा की आपको एक जैसे किरदारों के लिए ही अप्रोच करते हैं? ऐसा कभी नहीं हुआ। एक एक्टर के अंदर कई रंग होते हैं।

60 करोड़ की धोखाधड़ी मामले में नया मोड़, शिल्पा शेट्टी–राज कुंद्रा के 4 पूर्व कर्मचारियों को समन जारी

एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा से जुड़े 60 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी मामले में आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने जांच की रफ्तार तेज कर दी है। इस केस में नया मोड़ तब आया जब एक्ट्रेस की कंपनी में काम करने वाले चार पूर्व कर्मचारियों को पूछताछ के लिए समन भेजा गया है। इनमें से एक कर्मचारी का बयान दर्ज किया जा चुका है, जबकि बाकी तीन से जल्द ही पूछताछ की जाएगी।

ईओडब्ल्यू ने भेजे समन

मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने बेस्ट डील प्राइवेट लिमिटेड के चार पूर्व कर्मचारियों को नोटिस जारी किया है। बताया जा रहा है कि इन कर्मचारियों से कंपनी के वित्तीय लेन–देन, निवेश और खर्चों से जुड़े कई अहम सवाल पूछे जाएंगे। अधिकारियों के मुताबिक, एक कर्मचारी पहले ही पूछताछ के लिए शाखा के सामने पेश हो चुका है और उसका बयान दर्ज कर लिया गया है। बाकी तीनों कर्मचारियों को भी जल्द पेश होने के निर्देश दिए गए हैं। ईओडब्ल्यू अब इस बात की जांच कर रही है कि क्या वास्तव में राज कुंद्रा की कंपनी के पास इतना बड़ा ऑर्डर था, जिसके चलते उन्हें एक व्यवसायी से 60 करोड़ रुपये का लोन लेने की जरूरत पड़ी। साथ ही, अधिकारियों को शक है कि टैक्स बचाने के उद्देश्य से इस लोन को निवेश के रूप में दिखाया गया था।

जांच टीम इस पूरी फंडिंग प्रक्रिया की तह तक जाने की कोशिश कर रही है।

प्रोडक्ट सप्लायर और विज्ञापनदाताओं से भी पूछताछ

शाखा उन सभी कंपनियों से भी पूछताछ करेगी जो राज कुंद्रा और शिल्पा शेट्टी की कंपनी से सप्लाई या विज्ञापन के जरिए जुड़ी थीं। अगर किसी स्तर पर कोई गड़बड़ी या संदिग्ध ट्रांजेक्शन सामने आता है, तो ईओडब्ल्यू शिल्पा शेट्टी और राज कुंद्रा से दोबारा पूछताछ कर सकती है।

कंपनी के खर्चों पर सवाल

पूछताछ के दौरान एक कर्मचारी से कंपनी के वित्तीय ढांचे को लेकर भी कई सवाल पूछे गए। अधिकारियों ने पूछा कि कर्मचारियों को वेतन किस स्रोत से दिया जाता था– कंपनी की वास्तविक कमाई से या किसी बाहरी निवेश से? इसके अलावा, यह भी जांच की जा रही है कि कंपनी के ऑफिस की फर्निशिंग पर करीब 20 करोड़ रुपये खर्च करने का दावा कितना सही है। इस सिलसिले में फर्निशिंग का काम करने वाली कंपनियों से भी पूछताछ की जाएगी।

विदेश यात्रा की अनुमति पर रोक

कुछ समय पहले शिल्पा शेट्टी ने कोर्ट से विदेश यात्रा की अनुमति मांगी थी, लेकिन अदालत ने उनकी याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी कि जब तक वह कथित धोखाधड़ी की रकम जमा नहीं करतीं, तब तक विदेश नहीं जा सकतीं।

ऐश्वर्या राय बच्चन बॉलीवुड की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस में से हैं. हालांकि ये दिवा काफी समय से बड़े पर्दे से दूर हैं लेकिन वे सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और अपन एक से बढ़कर एक लुक की तस्वीरों से फैंस के दिलों की धड़कनें बढ़ाए रहती हैं. वहीं ऐश्वर्या राय बच्चन ने एक बार फिर अपनी लेटेस्ट इंस्टाग्राम पोस्ट से सबका ध्यान खींचा है. एक्ट्रेस ने बॉस लेडी लुक में फैंस के दिलों का करार लूट लिया है. बता दें कि ऐश्वर्या राय द्वारा शेयर की गई तस्वीरों में वह मनीष मल्होत्रा द्वारा डिजाइन की गई एक शानदार ब्लैक ड्रेस में नजर आ रही हैं और काफी खूबसूरत लग रही हैं. उनका ब्लैक आउटफिट व्हाइट शर्ट के साथ ब्लैक कोट पर डायमंड बटन, हाई कॉलर और ब्रॉड पैंट के साथ एक फिटेड सिल्हूट है. तस्वीरों में वह एक खूबसूरत बैकग्राउंड के सामने किलर पोज देती हुई नजर आ रही हैं. . इन तस्वीरों को शेयर करते हुए ऐश्वर्या ने कैप्शन में लिखा हैरू ष्मनीष मल्होत्रा, लॉरियल पेरिस. ष इससे पहले भी ऐश्वर्या ने अपनी लॉरियल पेरिस फैशन वीक से ब्लैक आउटफिट में कई तस्वीरें शेयर की थी जिन्होंने फैंस के दिलों का करार लूट लिया था. ऐश्वर्या ने हीरे से जड़ी शेरवानी स्टाइल में ब्लैक आउटफिट पहने हुए अपनी फोटोज शेयर की थी. एक्ट्रेस का ये लुक फैंस को बेहद पसंद आया था. ब्लैक आउटफिट के साथ रेड लिप्सिटक लगाए ऐश्वर्या कयामत लग रही थीं. सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस की इन तस्वीरों ने बवाल मचा दिया था.

आमिर खान की गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट को हाल ही में मुंबई के बांद्रा में स्पॉट किया गया था। गौरी किसी काम के सिलसिले में निकली थीं, तभी पैपराजी ने नजर पड़ते ही उनकी तस्वीरें क्लिक करनी शुरू कर दीं। हालांकि ये देखकर गौरी भड़क गईं। गौरी स्प्रैट को बांद्रा में दो बॉडीगार्ड्स के साथ देखा गया। इस दौरान उन्होंने लूज फिटेड लेमन येलो शर्ट पहनी थी, जिसे उन्होंने ऑफ व्हाइट ट्राउजर्स के साथ पेयर किया था। जैसे ही पैपराजी ने गौरी की तस्वीरें क्लिक करनी शुरू की, वो तेजी से आगे बढ़ने लगी। जब पैपराजी ने उनकी तस्वीरें क्लिक करना बंद नहीं किया, तो नाराज होकर उन्होंने कहा, श्कहां से आते हैं आप लोगश। वो और तेजी से आगे बढ़ने लगीं, लेकिन जब पैपराजी उनके पीछे आने लगे तो गुस्से में उन्होंने कहा, श्आप लोग मेरा पीछा क्यों कर रहे हो। मुझे अकेला छोड़ दो।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी की छाप ने थामा को बनाया बॉक्स ऑफिस सनसनी

बहुमुखी प्रतिभा और गहराई के मामले में, नवाजुद्दीन सिद्दीकी अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। उनका हर किरदार अभिनय में एक उत्कृष्ट कृति बन जाता है, और थामा इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं। यक्षसन के उनके किरदार ने दुनिया भर के दर्शकों के दिलों में तुरंत जगह बना ली है। अपनी दमदार स्क्रीन प्रेजेंस से लेकर अपनी भावनाओं के स्तर तक, नवाजुद्दीन ने एक बार फिर सबको याद दिला दिया है कि उन्हें भारतीय सिनेमा के सबसे दमदार कलाकारों में से एक क्यों माना जाता है। प्रशंसक, आलोचक और फिल्म जगत के जानकार, सभी एकमत होकर यक्षसन की प्रशंसा करते हैं, यह सिर्फ एक किरदार नहीं, बल्कि एक ऐसा एहसास है जो हमेशा याद रहता है। नवाजुद्दीन के जादू ने थामा को वाकई असाधारण बना दिया है। उनकी प्रभावशाली स्क्रीन एनर्जी, सूक्ष्म भाव–भंगिमाएँ और गहरी तीव्रता हर फ्रेम में जान डाल देती है, जिससे फिल्म देखने लायक बन जाती है। यही वह जादू है जिसने श्थामाश को दुनिया भर में बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता दिलाई है। फिल्म की वैश्विक सफलता लगातार बढ़ रही है, और इसकी सफलता का श्रेय नवाजुद्दीन की अद्भुत उपस्थिति और बेजोड़ कलात्मकता को जाता है। सबसे जटिल भूमिकाओं को भी प्रासंगिक बनाने की उनकी क्षमता ही उन्हें थम्मा की जान बनाती है।

मेंटल हेल्थ आपकी रिप्रोडक्टिव हेल्थ को कर सकता है प्रभावित, घातक बन सकता है स्ट्रेस

मेंटल हेल्थ से जुड़ी समस्याएं जैस– डिप्रेशन, स्ट्रेस और एंग्जायटी आपके रिप्रोडक्टिव हार्मोन्स को नुकसान कर सकती हैं। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी किसी भी तरह की परेशानी का महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर असर डाल सकती है।

अक्सर हम सभी मेंटल हेल्थ के बारे में कई बातें सुनते हैं। लेकिन सीधे तौर पर कई लोग मेंटल हेल्थ के बारे में बात करने से कतराते हैं। बता दें हमारी मेंटल हेल्थ सीधे तौर पर फिजिकल हेल्थ से जुड़ी होती है। इसलिए तनाव या चिंता होने पर हमें सिरदर्द या फिर थकावट महसूस होने लगती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपकी मानसिक हेल्थ आपके रिप्रोडक्टिव हेल्थ को भी प्रभावित करने का काम करती है। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी किसी भी तरह की परेशानी का महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर असर डाल सकती है। आज इस आर्टिकल में हम आपके इसी प्रश्न का उत्तर देने जा रहे हैं। आइए जानते हैं कि आपकी मेंटल हेल्थ किस तरह से रिप्रोडक्टिव हेल्थ से जुड़ी होती है।

हार्मोन्स का असंतुलन

मेंटल हेल्थ से जुड़ी समस्याएं जैस– डिप्रेशन, स्ट्रेस और एंग्जायटी आपके रिप्रोडक्टिव हार्मोन्स को नुकसान कर सकती हैं। क्योंकि ज्यादा तनाव होने पर कोर्टिसोल और एड्रेनालाईन जैसे स्ट्रेस हार्मोन्स का उत्पादन ज्यादा होने लगता है। जोकि प्रोजेस्टेरोन और एस्ट्रोजन जैसे रिप्रोडक्टिव हार्मोन्स को नुकसान पहुंचाने लगता है। वहीं हार्मोन्स के असंतुलन की वजह से ओवुलेटरी डिसफंक्शन, पीरियड्स की अनियमितता और प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं।

मेंस्ट्रुअल हेल्थ पर बुरा प्रभाव

स्ट्रेस लेने पर महिलाओं के मेंस्ट्रुअल हेल्थ पर भी बुरा असर पड़ सकता है। जिसकी वजह से पीरियड्स में अनियमितता या फिर पीरियड रुक सकते हैं। यह स्थिति पोस्ट–ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर और स्ट्रेस डिसऑर्डर जैसी स्ट्रेस से जुड़ी स्थितियों को प्रभावित कर सकती है। जो महिलाओं की प्रजनन क्षमता पर असर डाल सकती है।

फर्टिलिटी को हो सकता है नुकसान

मेंटल हेल्थ से जुड़ी समस्याओं के होने पर कंसीव करने में समस्या आ सकती है। ना सिर्फ महिलाओं बल्कि पुरुषों में भी तनाव और चिंता जैसी स्थितियां लिबिडो और सेक्सुअल डिजायर में कमी ला सकती हैं। इस समस्या के होने पर जहां पुरुषों में स्पर्म प्रोडक्शन और महिलाओं में अनियमित पीरियड्स की समस्या होने लगती है। जो कंसीव करने में मुश्किलें पैदा करती हैं।

बिहेवियर में बदलाव

अगर आपकी मानसिक हेल्थ कंट्रोल में नहीं है, तो इसके पीछे आपकी खराब लाइफस्टाइल भी जिम्मेदार हो सकती है। जैसे शराब पीना, अनहेल्दी खाना और धूम्रपान जैसे आदतों के कारण भी यह स्थिति हो सकती है। इस सभी आदतों के चलते आपके रिप्रोडक्टिव हेल्थ पर बुरा असर पड़ता है।

कैसे करें सुधार

किसी भी समस्या पर ज्यादा स्ट्रेस न लें, क्योंकि यह आपके मानसिक स्वास्थ्य पर असर डालता है।

हेल्दी लाइफस्टाइल फॉलो करें और पर्याप्त नींद जरूर लें।

रोजाना रूटीन में मेडिटेशन को शामिल करें। थोड़ा समय खुद को भी दें, क्योंकि इससे आपकी मेंटल हेल्थ बेहतर होगी और प्रजनन स्वास्थ्य को भी फायदा मिलेगा।

अगर आपको इमोशंस कंट्रोल करने में मुश्किल आ रही है, तो किसी करीबी से अपनी परेशानी शेयर कर सकते हैं। या फिर डायरी में अपनी भावनाओं को लिख सकते हैं।

शादी से पहले हेल्दी और शाइनी बालों के लिए डाइट में शामिल करें ये चीजें, जल्द दिखेगा असर

अगर आप भी लंबे, हेल्दी और शाइनी बाल पाना चाहती हैं, तो इसके लिए आपको अपनी लाइफस्टाइल में थोड़ा सा बदलाव करना होगा। ऐसे में बालों को हेल्दी और शाइनी बनाने के लिए आपको यह टिप्स अपनाने चाहिए।

काले, लंबे और घने बाल हर किसी को पसंद होते हैं। ऐसे में महिलाएं हो या फिर पुरुष सभी अपने बालों को हेल्दी और शाइनी बनाए रखने के तरीके खोजते हैं। वहीं शादियों के सीजन की भी शुरूआत हो चुकी है। ऐसे में लड़का हो या लड़की सभी अपने बालों, स्किन आदि को बेहतर बनाने के लिए कई तरह के उपाय करते हैं। बता दें कि हमारे खानपान का असर हमारी सेहत पर पड़ता है। ऐसे में अगर आप भी लंबे, हेल्दी और शाइनी बाल पाना चाहती हैं, तो इसके लिए आपको अपनी लाइफस्टाइल में थोड़ा सा बदलाव करना होगा। हम आपको बताने जा रहे हैं कि आपको अपनी डाइट में किन चीजों को शामिल करना चाहिए। जिससे आपके बालों को पर्याप्त पोषण मिल सके।

तेल से करें मसाज

बालों को हेल्दी और शाइनी बनाने के लिए आप सिर पर तेल की मसाज जरूर करें। इसके लिए आप नारियल तेल, जैतून तेल और तिल के तेल का इस्तेमाल कर सकती हैं। इन तेलों में प्रर्याप्त मात्रा में विटामिन और मिनरल्स पाया जाता है। जो आपके बालों को हेल्दी और शाइनी बनाने में मदद करेंगे। बता दें कि तिल के तेल में आयरन, कॉपर, जिंक, कैल्शियम और मैग्नीशियम पाया जाता है। जो आपके बालों की हेल्थ के लिए अच्छे होते हैं। वहीं नारियल तेल में कैल्शियम, मैग्नीशियम, मिनरल्स और एंटी बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं।

बालों के लिए जरूरी है प्रोटीन

इसके साथ ही बालों को हेल्दी बनाने के लिए आप अपनी डाइट में प्रोटीन से भरपूर फूड्स को शामिल करना चाहिए। इसके लिए आप दही, अंडा, मूंगफली और सोयाबीन का सेवन कर सकती हैं। अगर आप प्रोटीन से भरपूर डाइट लेती हैं, तो इसका असर जल्द ही आपको सेहत और बालों दोनों पर देखने को मिलेगा।

हरी सब्जियों का करें सेवन

बालों को लंबा और घना बनाने के लिए आप फल और सब्जियों को अपनी डाइट में शामिल करें, जिससे आपके बालों की क्वालिटी में सुधार होता है। फल और सब्जियों में अच्छी मात्रा में मिनरल्स, विटामिन्स और एंटीऑक्सीडेंट्स पाया जाता है। जो आपके बालों को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं और अच्छी ग्रोथ देते हैं। वहीं करी पत्ता जिसे मीठी नीम भी कहा जाता है, यह भी आपके बालों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

ध्यान रखें ये बातें

अगर आप भी बालों की ग्रोथ के साथ इनको शाइनी और हेल्दी बनाना चाहते हैं। तो तली भुनी और मीठी चीजों का कम से कम सेवन करें।

बालों को धोने के फौरन बाद शैंपू न करें। साथ ही समय पर बालों में तेल जरूर डालें।

रोजाना स्कैल्प की मसाज करें। इससे ब्लड फ्लो अच्छा होगा और बालों की ग्रोथ अच्छी होगी।

खूबसूरत के साथ स्वार्थी होती हैं कन्या राशि की लड़कियां

ज्योतिष शास्त्र के हिसाब से हर राशि के जातक का स्वभाव और व्यक्तिव अलग–अलग होता है। वो जिस हिसाब से बर्ताव करते हैं वो उनकी राशि पर ही काफी हद तक निर्भर करता है। लेकिन आपको ये जानकर हैरानी होगी कि एक ही राशि के पुरुष और महिला का स्वभाव भी एक दूसरे से काफी अलग होता है। इन्हीं में शामिल हैं कन्या यानी टपतहव राशि की महिलाएं जो काफी मेहनती, शांत, रिजर्व और सौम्य स्वभाव की होती हैं। कन्या राशि की लड़कियां बहुत प्रैक्टिकल भी होती हैं, वो हर चीज को बहुत बारीकी से इेवतइ करती हैं। वो किसी भी रिश्ते को लेकर बहुत सीरियस होती है और लंबे समय तक साथ निभाने में यकीन रखती हैं। बता दें कन्या राशि की लड़की का दिल जीतना आसान नहीं होता है। आइए आपको बताते हैं कन्या राशि की लड़कियों के बारे में विस्तार से...

हर वक्त दिखना चाहती हैं अट्रैक्टिव

कन्या राशि की लड़कियां हर चीज में चमतमिबजपवद ढूंढती हैं। चाहे फिर खुद सजने– संवरने की बात ही क्यों न हो। वो चाहती हैं सामने वाला भी अच्छा दिखा। इसलिए कन्या राशि की लड़कियों को इंप्रेस करना है तो सबसे पहले कपड़े, शूज, नेल्स, ये सब कुछ साफ– सुथरा और परफेक्ट कर लें। इस राशि के जातक इन सब चीजों पर बहुत गौर करते हैं।

पर्सनल स्पेस भी है इनके लिए जरूरी

पार्टनर के मामले में कन्या राशि की महिलाएं बहुत चूजी होती हैं। उन्हें खुद की पर्सनल स्पेस बहुत प्यारी होती है। अगर उसमें कोई घूसने की कोशिश करता है, तो ऐसे लोगों से वो दूरी बना लेती हैं। इश्क और रोमांस के मामले में इन्हें धीरे– धीरे ही आगे बढ़ना पसंद है।

शो आफ करना नहीं है पसंद

इन राशि के जातकों को शो आफ करना बिल्कुल पसंद नहीं है। अगर आप बड़ी गाड़ी, खानदान की शानो– शौकत आदि से उनका दिल जीतने की कोशिश करेंगे, तो बिल्कुल नाकाम रहेंगे। मेहनती होने के कारण इन्हें पार्टनर भी मेहनती ही पसंद आता है। ऐसे में उनके सामने किसी प्रकार का दिखावा न करें।

खुलकर करती हैं आलोचना

कन्या राशि की लड़कियां अपने विचार खुलकर प्रकट करती हैं। अगर उन्हें आपका कोई काम पसंद नहीं आ रहा है तो वो आपके मुंह पर आपकी आलोचना करेंगी। इसलिए अगर आप कन्या राशि की लड़की संग रिश्ते में आना चाहते हैं तो आलोचना के लिए भी तैयार रहें।

वहीं कन्या राशि वालों की कुछ बुरी आदतें भी होती हैं, जो दूसरे लोगों को उनसे दूर कर सकती हैं...

दरअसल, ऊपर बताए कुछ अच्छे गुणों के साथ उनमें कुछ कमियां भी होती हैं। जैसे कन्या राशि वाले बहुत स्वार्थी होते हैं। वो दूसरे लोगों की सलाह को महत्व नहीं देते हैं, जिस वजह से उन्हें कई बार नुकसान भी उठना पड़ सकता है। वहीं उन्हें दूसरों का मजाक उड़ाने में भी बहुत मजा आता है, जिससे उनकी दोस्ती के और दूसरे संबंध खराब हो सकते हैं। वहीं बातों को बढ़ा– चढ़ाकर कहने की आदत इनके लिए कभी– कभी हास्यास्पद अजीबो– गरीब स्थिति पैदा कर सकती है।

बेकार चूड़ियों की मदद से घर को दे सकती हैं नया लुक, आसानी से बना सकती हैं कई शानदार चीजें

आज हम आपके साथ कुछ ऐसे आइडियाज शेयर करने जा रहे हैं। जिनकी मदद से आपकी बेकार चूड़ियां फिर से काम आ सकती हैं। ऐसे में आप इनको फेंकने की बजाय रिसाइकल कर सकती हैं।

भारतीय महिलाओं के सोलह श्रृंगार में चूड़ियों का अपना खास महत्व होता है। महिलाएं अक्सर अपने कपड़ों से मैच कर चूड़ियां पहनना पसंद करती हैं। देखा जाए तो महिलाओं के पास चूड़ियों का भंडार होता है। वहीं लड़कियां भी चूड़ियां पहनना पसंद करती हैं। कई बार इनकी संख्या इतनी अधिक हो जाती है कि इनको रखने के लिए जगह नहीं मिलती है। वहीं कई बार चूड़ियां खराब हो जाती हैं, जिसके कारण हम उन्हें दोबारा इस्तेमाल में नहीं लाते हैं। ऐसे में अगर आपके पास भी तमाम सारी ऐसी चूड़ियां हैं, जिनका आप इस्तेमाल नहीं करती हैं, तो आप इनको फेंकने की बजाय रिसाइकल कर सकती हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपके साथ कुछ ऐसे आइडियाज शेयर करने जा रहे हैं। जिनकी मदद से आपकी बेकार चूड़ियां फिर से काम आ सकती हैं। इसके अलावा आप इन्हें दोबारा पहनने के साथ ही डेकोरेशन में भी इस्तेमाल कर सकती हैं।

विंड चाइम्स

बाहर से महंगे विंड चाइम्स देखने में काफी ज्यादा सुंदर लगते हैं। हांलाकि यह काफी जल्दी खराब हो जाते हैं। तो वहीं कुछ विंड चाइम्स की आवाज इतनी तेज होती है कि उनके बचने से शौर होने लगता है। ऐसे में अगर आप भी विंड चाइम्स पर ज्यादा पैसे नहीं खर्च करना चाहती हैं, तो आप बेकार पड़ी चूड़ियों से विंड चाइम्स बना सकती हैं। इनको बनाने के लिए सबसे पहले 3 चूड़ियों को लेकर उनमें पतली वाली गोटा पट्टी को बांध लें। आप चाहें तो इनको अलग–अलग रिबन से भी सजा सकते हैं।

अब चूड़ी के दोनों तरफ एक–एक चूड़ी ग्लू से पेस्ट करती जाएं। वहीं मार्केट में मिलने वाली छोटी बेल्स को एंब्रॉयडरी थ्रेड से भी सजा सकती हैं। फिर तीनों चूड़ियों को अटैच कर लें और सिंगल वाली चूड़ी के ऊपर सुंदर गोटा पट्टी बांध दें। इस आसान तरीके से विंड चाइम्स बनकर तैयार हो जाएंगी। इन्हें आप खिड़की या फिर मेन गेट पर लगा सकते हैं।

पर्दों के लिए टाई बैक्स

लिविंग एरिया में पर्दों को हमें टाई बैक्स या पुलबैक्स से बांधना पड़ता है। लेकिन मौके पर कई हमारे पास टाई बैक्स नहीं होते हैं। इस कारण हम उनमें गांठ लगा देते हैं। या फिर उनको एकत्र कर एक किनारे कर देंगे। जिसकी वजह से लिविंग एरिया की पूरी शो खराब लगने लगती है। ऐसे में आप चूड़ियों से पुलबैक बना सकते हैं। ऐसे में सबसे पहले 2–2 चूड़ियों को रिबन से बांध लें। इसके बाद उसको दूसरी चूड़ी से बांध लें। अब उन चूड़ियों को पर्दों पर लगाएं और दूसरी चूड़ी को क्रॉस कर बाहर निकालें। इस आसान तरीके से सुंदर सा टाइबैक बनकर तैयार हो जाएगा।

ऐसे पहनें पुरानी चूड़ियां

वैसे तो आप अपनी साड़ियों के साथ मैचिंग की चूड़ियां पहनती होंगी। लेकिन अगर आप पुरानी चूड़ियों को फिर से नए अंदाज में पहनना चाहती हैं, तो हम आपको एक आसान ट्रिक बता रहे हैं। जिसकी मदद से आप न सिर्फ एथनिक बल्कि मॉर्डन कपड़ों के साथ भी पहन सकती हैं। पुरानी चूड़ियों को अलग–अलग रंग के सिल्क एंब्रॉयडरी थ्रेड्स भी रख लें। इसके बाद अलग–अलग रंग से या एक ही रंग के थ्रेड से इनको रैप कर लें।

बता दें कि गुंथे हुए स्टाइल में थ्रेड्स को चूड़ियों पर रैप करें और आखिर में गोंद की मदद से चिपका लें। फिर 4–5 अलग–अलग रंग के थ्रेड्स लें और चूड़ियों के बीच बांध लें। इनमें थ्रेड 8 के आकार में बंधे होने चाहिए। इन 8 के आकार को आपको इस तरह से काटना है कि यह फूल ब्रेश की तरह लगें। फिर इसके एंड को छोटे से धागे से बांध दें। इसके बाद उन्हें चूड़ियों से अटैच कर दें।

चूड़ियों से सजाएं प्लेन दुपट्टा

अगर आप अपने प्लेन दुपट्टे पर कुछ क्रिएटिविटी दिखाना चाहती हैं, तो आप चूड़ियों के इस्तेमाल से उसे सजा सकती हैं। इससे आपका सिंपल सा दुपट्टा हैवी और खूबसूरत दिखेगा। आप दुपट्टे को सजाने के लिए मैचिंग या फिर कॉन्ट्रास्टिंग चूड़ियों का इस्तेमाल कर सकती हैं। बेसिक चूड़ियों को सिल्क के धागे से रैप कर लें। फिर उसके ऊपर गोंद से सितारे चिपका दें। वहीं दुपट्टे के किनारे को 4–4 चूड़ियों की सिलें। आप चाहें तो किनारे पर सजाने वाली चूड़ियों का साइज अलग–अलग भी ले सकती हैं।

संक्षिप्त

दफ्तरों में 36005 वर्ग फुट जगह खाली कराई गई, वाणिज्य विभाग ने चलाया स्वच्छता से जुड़ा विशेष अभियान

नई दिल्ली। वाणिज्य विभाग ने 2 अक्तूबर से 31 अक्तूबर 2025 तक आयोजित स्वच्छता से जुड़े विशेष अभियान 5.0 का सफलतापूर्वक समापन किया। अभियान का मकसद स्वच्छता को बढ़ावा देना, कार्यकुशलता में सुधार लाना और विभाग, उसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) व संबद्ध संगठनों में लंबित शिकायतों को दूर करना था। विभाग ने इस पहल के तहत प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, मुद्दों का समय पर समाधान सुनिश्चित करने और कार्यस्थल प्रबंधन और स्वच्छता मानकों को बढ़ाने की कोशिश की। विशेष अभियान 5.0 की प्रगति की विभाग के नोडल अधिकारी और उसके क्षेत्र संगठनों द्वारा बारीकी से निगरानी की गई। विभाग और उसके सार्वजनिक उपक्रमों और संगठनों के अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी अभियान की सफलता को आगे बढ़ाने में सहायक रही। मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में कहा कि कुल 277 स्वच्छता अभियान चलाए गए। इस दौरान ई–कचरे और स्क्रैप के निपटान से लगभग 70 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। ऐसा होने से दफ्तरों में 36,005 वर्ग फुट जगह खाली हुई। अभियान के दौरान मुंबई में एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ईसीजीसी) मुख्यालय में बड़े पैमाने पर चार्जिंग पॉइंट्स लगाकर इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की कोशिश की गई। वहीं रूफटॉप सौर ऊर्जा प्रणालियों की स्थापना के जरिए कार्बन फुटप्रिंट कम करने की की पहल हुई। हरियाली बढाकर और बेहतर पार्किंग सुविधाओं के साथ कार्यालय परिसर में भी सकारात्मक बदलाव किए गए। मद्रास एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग ज़ोन (एमईपीजेड) परिसर के पास झील का भी पुनरुद्धार किया गया। पहल के दौरान डिजिटलीकरण और रिकॉर्ड प्रबंधन, एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, ई–कचरे पर जागरूकता अभियान चलाया गया। साथ ही, बिजली के उपकरणों और लिफ्ट की भी जांच की गई।

केरल में भारी जुर्माने के विरोध में तमिलनाडु की ओमनी बस सेवाएं ठप, यात्रियों की मुश्किलें बढ़ीं

नई दिल्ली। तमिलनाडु के ऑल ओमनी बस एसोसिएशन ने पड़ोसी राज्य केरल में अपनी बस सेवाएं निलंबित करने की घोषणा की है। यह कदम केरल सरकार की ओर से एसोसिएशन पर भारी जुर्माना लगाए जाने के विरोध में उठाया गया है। एसोसिएशन ने बताया कि यह फैसला 7 नवंबर की रात से प्रभावी होगा। इस निर्णय से सैकड़ों यात्रियों, खासकर सबरीमाला यात्रा पर जाने वाले अय्यप्पा भक्तों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। एसोसिएशन ने दावा किया है कि केरल परिवहन विभाग ने कथित परमिट उल्लंघन के लिए कुल 70 लाख रुपये का जुर्माना लगाया और 30 से अधिक बसों को जब्त कर लिया। एसोसिएशन के अध्यक्ष ए. अनबालागन ने कहा कि चेन्नई, कोयंबटूर, मदुरै और अन्य स्थानों से आने वाली बसों पर प्रति बस 2 लाख रुपये से 2.5 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया गया है। केरल परिवहन विभाग ने 7 नवंबर को अचानक जुर्माना लगा दिया, जिससे हमारे यात्रियों और हमें भी परेशानी हुई। उन्होंने कहा कि अचानक की गई इस कार्रवाई से यात्री परेशान हो गए और दावा किया कि 150 बसों की बुकिंग रद्द कर दी गई। एसोसिएशन ने तमिलनाडु सरकार से तत्काल हस्तक्षेप करने और इस मुद्दे को सुलझाने की अपील की है।

भारत–न्यूजीलैंड एफटीए वार्ता का चौथा दौर सफल, व्यापार और निवेश में नई संभावनाओं के खुलने की उम्मीद

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के चौथे दौर की वार्ता सफलतापूर्वक संपन्न हुई। दोनों पक्षों के बीच पांच दिनों तक रचनात्मक और दूरदर्शी चर्चा हुई। केंद्रीय वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और न्यूजीलैंड के व्यापार मंत्री टॉड मैक्ले ने इस दौरान हुई स्थिर प्रगति की सराहना की। साथ ही एक आधुनिक, व्यापक और भविष्य के लिए तैयार एफटीए की दिशा में काम करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। चर्चा में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार, आर्थिक सहयोग और उत्पत्ति के नियमों जैसे अहम मुद्दों पर बातचीत हुई। दोनों पक्षों ने आर्थिक संबंधों को और मजबूत बनाने व एक–दूसरे के लिए लाभदायक साझेदारी विकसित करने की साझा प्रतिबद्धता जताई। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक समृद्धि और सुरक्षित सप्लाई चेन को बढ़ावा देने के लिए गहरे आर्थिक साझेदारी के प्रति अपने संकल्प को दोहराया। मंत्रियों ने कहा कि प्रस्तावित एफटीए से दोनों देशों के बीच व्यापार प्रवाह में बढ़ोतरी, निवेश संबंधों में मजबूती, सप्लाई चेन की लचीलापन में सुधार और कारोबारियों के लिए बेहतर बाजार पहुंच सुनिश्चित होगी। दोनों देशों ने इस प्रक्रिया को जल्द पूरा करने और एक संतुलित व पारस्परिक रूप से लाभदायक समझौते तक पहुंचने की प्रतिबद्धता जताई।

भारत–पाकिस्तान एशिया कप ट्रॉफी विवाद सुलझाने के लिए आईसीसी ने बनाई कमेटी! किसे सौंपी जिम्मेदारी ?

दुबई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (प्ब्ब) ने भारत और पाकिस्तान के बीच एशिया कप 2025 के बाद उत्पन्न ट्रॉफी विवाद को सुलझाने के लिए विशेष समिति गठित की है। टेलीकॉम एशिया स्पोर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, इस समिति का नेतृत्व ओमान क्रिकेट बोर्ड के चेयरमैन पंकज खिमजी करेंगे। खिमजी को दोनों क्रिकेट बोर्डों के नज़दीकी माना जाता है और वे पहले भी कई विवादों में मध्यस्थता कर चुके हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, बीसीसीआई ने यह मुद्दा आईसीसी की बोर्ड मीटिंग में उठाया, जिसके बाद वैश्विक संस्था ने पहली बार इस मसले में हस्तक्षेप करने का निर्णय लिया।

ट्रॉफी विवाद की जड़

विवाद की शुरुआत एशिया कप 2025 के फाइनल के बाद हुई, जब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख मोहसिन नकवी ने विजेता भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव को ट्रॉफी देने की कोशिश की। लेकिन सूर्यकुमार ने ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। रिपोर्ट के मुताबिक, सूर्यकुमार ने नकवी से ट्रॉफी स्वीकार नहीं की क्योंकि नकवी पाकिस्तान के गृह मंत्री भी हैं और भारत में आतंकवाद को समर्थन देने में उनकी भूमिका को लेकर आपत्ति जताई गई थी। इस पर नकवी ने कहा कि एशियन क्रिकेट काउंसिल (।ब्ब) के अध्यक्ष होने के नाते ट्रॉफी देने का अधिकार केवल उन्हीं को है। इसके बाद सूर्यकुमार यादव ने ट्रॉफी लिए बिना ही मज़ाकिया अंदाज़ में "काल्पनिक ट्रॉफी" उठाकर अपने साथियों के साथ जश्न मनाया। रिपोर्ट में कहा गया, सूर्यकुमार ने असली ट्रॉफी लेने से मना कर दिया और अपने साथियों के साथ नकली ट्रॉफी पकड़कर जश्न मनाया, जिससे पीसीबी और एसीसी प्रमुख दोनों नाराज हो गए।

दुबई में ट्रॉफी लेने से किया इनकार

मोहसिन नकवी ने बाद में बीसीसीआई को 10 नवंबर को दुबई में एक समारोह में ट्रॉफी लेने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन बीसीसीआई ने इसे ठुकरा दिया। इसके बजाय, भारतीय बोर्ड ने इस पूरे मुद्दे को आईसीसी बोर्ड मीटिंग के दौरान औपचारिक रूप से उठाया। एक सूत्र ने कहा, मीटिंग का माहौल सौहार्दपूर्ण था, और ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड तथा दक्षिण अफ्रीका जैसे बोर्डों ने दोनों देशों को शांत कराने की कोशिश की। उन्होंने ट्रॉफी विवाद सुलझाने के लिए तीन सदस्यीय समिति बनाने पर सहमति जताई।

नकवी भी हुए शामिल

पाकिस्तान क्रिकेट प्रमुख मोहसिन नकवी ने भी इस बैठक में हिस्सा लिया। सूत्रों के मुताबिक, श्वार्ता के दौरान कोई कड़वाहट नहीं दिखी। आईसीसी बोर्ड ने माना कि भारत और पाकिस्तान दोनों ही क्रिकेट जगत के अहम सदस्य हैं और दोनों को अपने मतभेद सुलझाने चाहिए।श नकवी की दुबई यात्रा आखिरी समय में तय हुई थी, क्योंकि पाकिस्तान की सीनेट की एक अहम बैठक स्थगित कर दी गई थी। सीनेट उस दिन देश के संविधान में एक महत्वपूर्ण संशोधन पारित करने वाली थी।

अब जिम्मेदारी पंकज खिमजी के कंधों पर

अब इस पूरी मध्यस्थता की जिम्मेदारी पंकज खिमजी को सौंपी गई है, जिन्हें दोनों देशों के साथ अच्छे संबंधों के लिए जाना जाता है। आईसीसी को उम्मीद है कि उनकी अगुवाई में यह विवाद शांतिपूर्वक हल हो जाएगा।

BCCI पर भड़के मोहम्मद शमी के कोच, कहा–

जानबूझकर किया जा रहा है नज़रअंदाज़

टीम इंडिया के तेज़ गेंदबाज़ मोहम्मद शमी के अंतरराष्ट्रीय करियर पर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। रणजी ट्रॉफी 2025द्26 के शुरुआती तीन मैचों में 15 विकेट झटकने के बावजूद शमी को दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए भारतीय टीम में जगह नहीं मिली है। चयन से बाहर किए जाने पर शमी के निजी कोच मोहम्मद बदरुद्दीन ने नाराज़गी जताते हुए कहा कि चयनकर्ताओं ने पहले से ही उन्हें नज़रअंदाज़ करने का मन बना लिया है। बता दें कि शमी ने घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया है और लगातार फिट भी नज़र आए हैं। उनके कोच बदरुद्दीन का कहना है कि "जब कोई खिलाड़ी टेस्ट मैच खेल रहा है, 15 विकेट ले रहा है, तो उसे अनफिट कैसे कहा जा सकता है? यह साफ है कि चयनकर्ता उन्हें जानबूझकर नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। अब इसके पीछे की वजह वही बता सकते हैं।" गौरतलब है कि शमी को पहले भारत 'ए' टीम में भी नहीं चुना गया था, जबकि दक्षिण अफ्रीका 'ए' के खिलाफ अनऑफिशियल टेस्ट और वनडे सीरीज में कई युवा खिलाड़ियों को मौका दिया गया। इसके बाद जब सीनियर टीम का चयन हुआ तो वहां भी शमी का नाम नहीं था। बदरुद्दीन का कहना है कि "यह फैसला पहले से तय था। अगर टेस्ट टीम का चयन रणजी प्रदर्शन के आधार पर नहीं होगा और टी20 के मापदंडों से होगा, तो यह न्यायसंगत नहीं है। फिटनेस और प्रदर्शन का बहाना बनाना सिर्फ एक ढाल है।" शमी ने आखिरी बार भारत के लिए मार्च 2025 में न्यूजीलैंड के खिलाफ चौंपियंस ट्रॉफी फाइनल खेला था, जहां उन्होंने कुल पांच मैचों में नौ विकेट लेकर टूर्नामेंट के दूसरे सबसे सफल गेंदबाज़ के रूप में जगह बनाई थी।

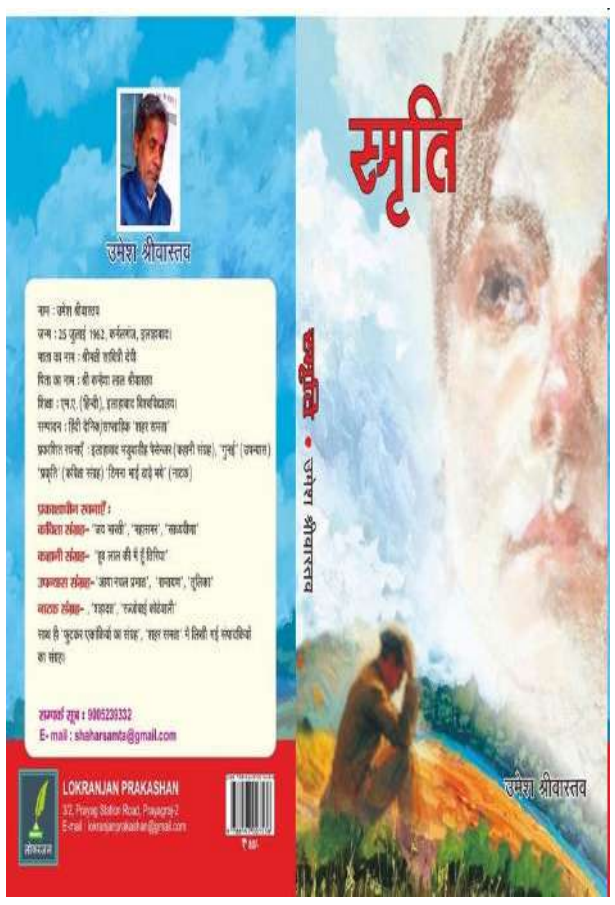

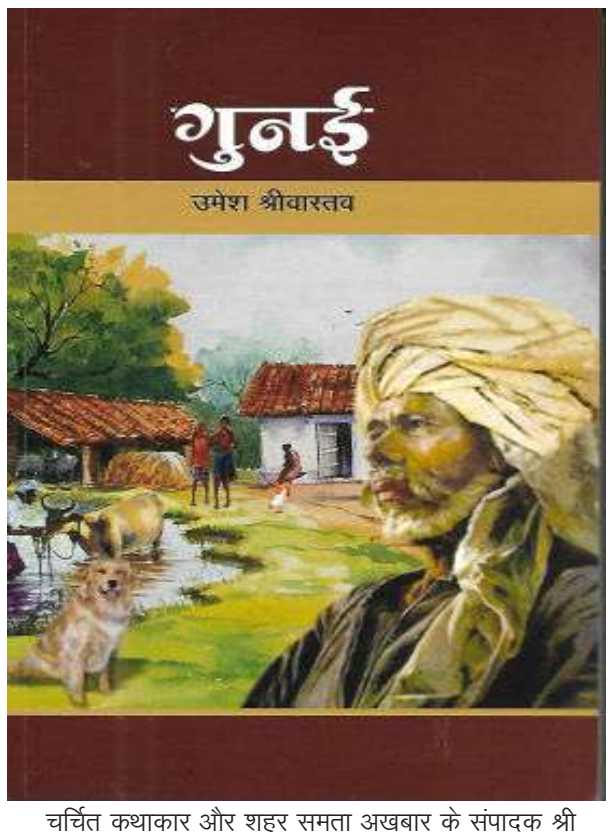

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

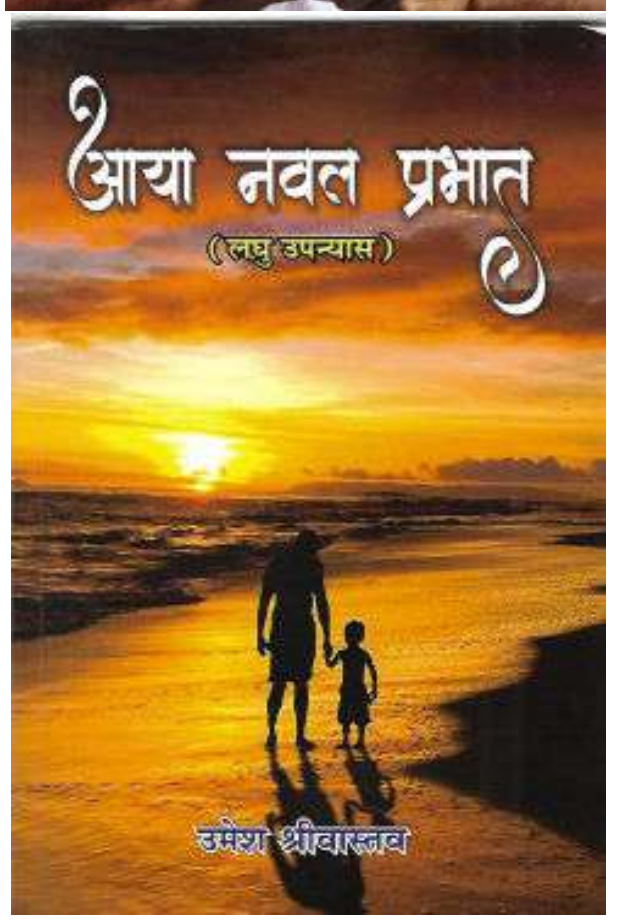

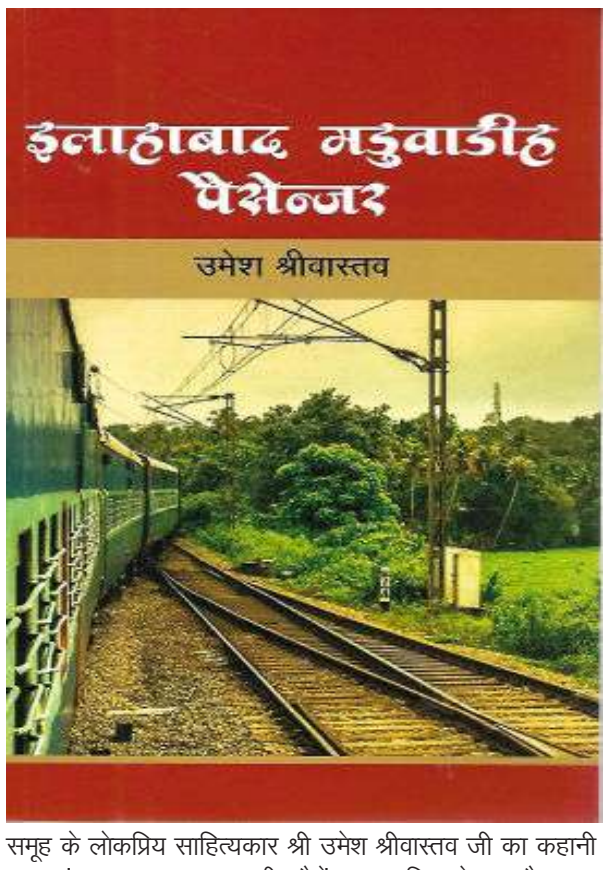

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

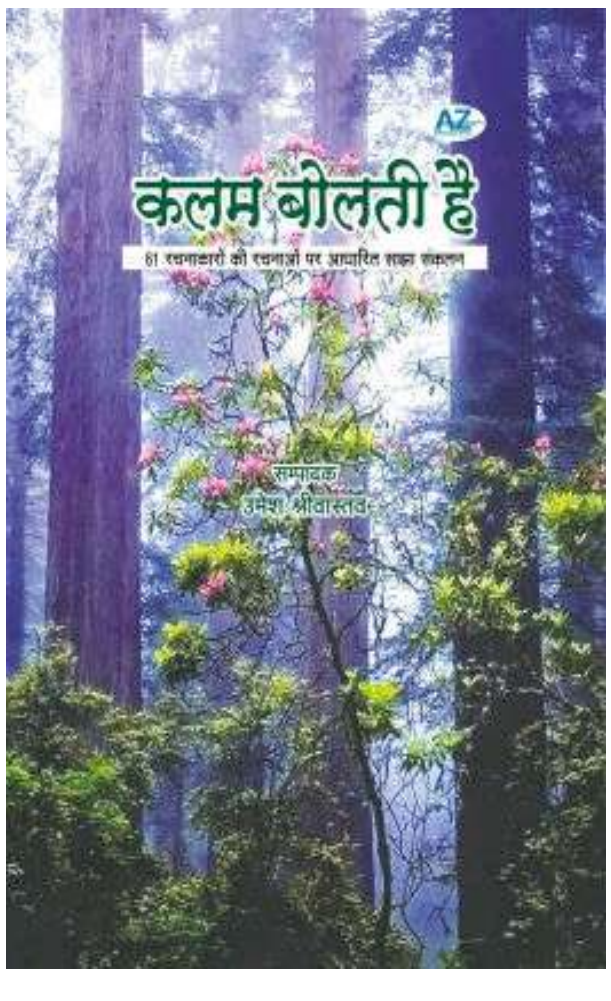

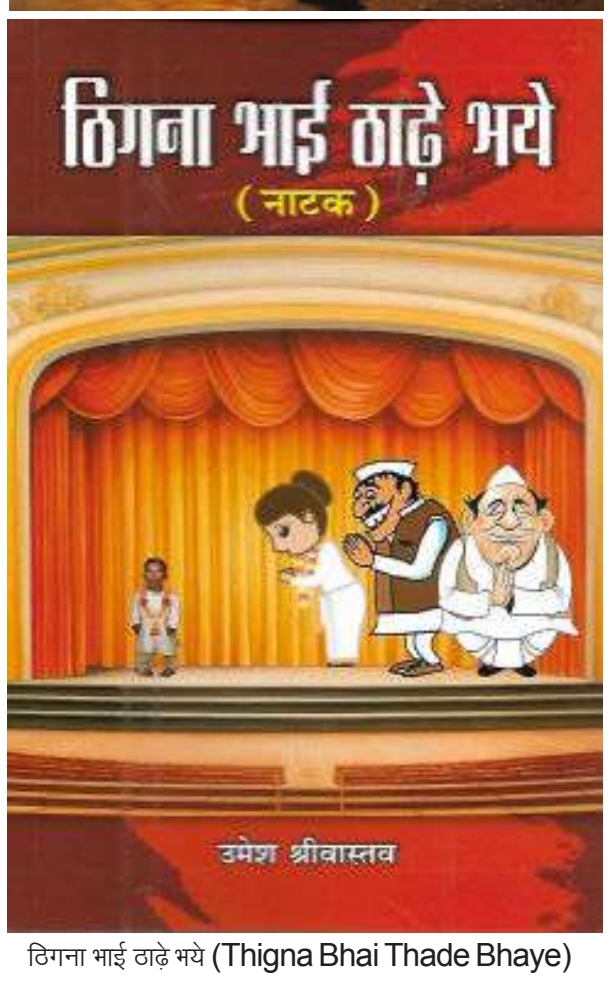

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त समाचार

ज़ोहरान ममदानी की वजह से देश छोड़ देंगे 13 लाख नागरिक? मेयर बनते ही भड़क उठा इजरायल

न्यूयॉर्क वैसे भी कोई साधारण शहर नहीं है, फिर भी ज़ोहरान ममदानी की जीत न्यूयॉर्क के मानकों के हिसाब से भी असाधारण है। महज 34 साल के भारतीय/दक्षिण एशियाई/युगांडाई मूल के मुस्लिम व्यक्ति ममदानी और उनके विचारों को दुनिया भर में प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। इन विचारों में से एक है उनका फ़िलिस्तीन समर्थक और ज़ायोनिज़्म विरोधी रुख़, यही वजह है कि उनकी जीत ने इज़राइल और उसके यहूदी नागरिकों के एक बड़े हिस्से में भी हलचल मचा दी है। यरुशलम निवासी हाना

जैगर ने ममदानी की उस शहर में सफलता के बाद समाचार एजेंसी एपी को बताया बहुत बुरा। यहूदियों के लिए, इज़राइल के लिए, सबके लिए, यह बहुत बुरा है। आप और क्या कह सकते हैं? इज़राइल के तेल अवीव के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी यहूदी आबादी है। ममदानी का अभियान मुख्यतः स्थानीय आर्थिक मुद्दों से प्रेरित था, जैसे मुफ़्त परिवहन, किफ़ायती बाल देखभाल और आवास का वादा। लेकिन इज़राइल में, जो 1948 में अपने गठन के बाद से दशकों से फ़िलिस्तीनी क्षेत्रों में संघर्ष में उलझा हुआ है, ममदानी का फ़िलिस्तीनी समर्थक मंच सुर्ख़ियों में है। अमेरिका की मुख्यधारा की राजनीति लंबे समय से कट्टर रूप से इज़राइल समर्थक रही है, तब भी जब संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक दृष्टिकोण तेल अवीव की नीतियों और युद्धों की आलोचना करते रहे हैं। ममदानी का चुनाव अब तक के रुख़ में आए बदलाव का सबसे मज़बूत उदाहरण माना जा रहा है। एक तरह से, यह अमेरिकी जनता, ख़ासकर युवा डेमोक्रेटिक मतदाताओं के बीच इज़राइल के प्रति समर्थन में आई नरमी को दर्शाता है, जबकि रिपब्लिकन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ममदानी के ख़िलाफ़ लगातार बयानबाज़ी कर रहे हैं।

भारतीय मूल के विवेक रामास्वामी को ट्रंप का समर्थन, बताया- युवा, मजबूत और स्मार्ट

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2026 के ओहायो गवर्नर पद की दौड़ में भारतीय मूल के उद्यमी विवेक रामास्वामी का समर्थन किया है और ट्रुथ सोशल पर एक ज़ोरदार समर्थन जारी किया है। ओहायो को अपना प्रिय राज्य बताते हुए और तीन बार बड़ी जीत हासिल करने के बाद, ट्रंप ने रामास्वामी को एक ऐसा उम्मीदवार बताया जिसके पीछे रिपब्लिकनों को एकजुट होना चाहिए। उन्होंने रामास्वामी के व्यक्तित्व, पृष्ठभूमि और नीतिगत एजेंडे की भी प्रशंसा की। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ओहायो के गवर्नर पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी के भारतीय मूल के नेता विवेक रामास्वामी का समर्थन करते हुए कहा कि वह महान गवर्नर साबित होंगे।

उद्यमी से नेता बने रामास्वामी राष्ट्रपति पद के लिए पिछले साल रिपब्लिकन पार्टी के प्राइमरी चुनाव में असफल रहे थे। उन्होंने बाद में ट्रंप का समर्थन किया और जल्द ही उनके करीबी विश्वासपात्र बन गए। ट्रंप ने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया मंच ट्रुथ सोशल पर लिखा, विवेक रामास्वामी ओहायो के एक महान गवर्नर साबित होंगे और मैं उन्हें पूरी तरह से समर्थन देता हूं –वह आपको कभी निराश नहीं करेंगे! उन्होंने कहा मैं विवेक को अच्छी तरह जानता हूं, मैं उनसे प्रतिस्पर्धा कर चुका हूं और वह वाकई बहुत खास हैं। वह युवा, मजबूत और बुद्धिमान हैं! ट्रंप ने उन्हें बहुत अच्छा इंसान बताते हुए कहा कि रामास्वामी अमेरिका से सच्चा प्यार करते हैं। उन्होंने कहा आपके अगले गवर्नर के रूप में विवेक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, करों और नियमों में कटौती करने, मेड इन द यूएसए को बढ़ावा देने, अमेरिकी ऊर्जा प्रभुत्व को बढ़ाने, हमारी अब तक की सबसे सुरक्षित सीमा को सुरक्षित रखने, प्रवासी अपराध रोकने, हमारी सेना/पूर्व सैनिकों को मजबूत करने, कानून–व्यवस्था सुनिश्चित करने, चुनावी निष्पक्षता को सुनिश्चित करने और हमेशा आलोचना का शिकार होने वाले दूसरे संशोधन की रक्षा करने के लिए अथक प्रयास करेंगे। अमेरिका के संविधान का दूसरा संशोधन हथियार रखने के अधिकार की रक्षा करता है। रामास्वामी (40) ने उनका समर्थन करने के लिए ट्रंप को धन्यवाद दिया।

जी20 समिट पर ट्रंप के इस बयान से दुनिया में हड़कंप! जेडी वेंस ने भी उठाया बड़ा कदम

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने घोषणा की कि इस साल दक्षिण अफ्रीका में होने वाले ग्रुप 20 (जी20) शिखर सम्मेलन में कोई भी अमेरिकी सरकारी अधिकारी शामिल नहीं होगा। उन्होंने शिखर सम्मेलन को वहाँ आयोजित करने के फैसले को पूरी तरह से अपमानजनक बताया। उन्होंने श्वेत अफ्रीकी किसानों के खिलाफ कथित दुर्व्यवहारों का हवाला दिया, जिनमें हिंसा, मौतें और उनकी ज़मीन ज़ब्त करना शामिल है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके साथ हो रहे व्यवहार को लेकर चिंताएँ ही अमेरिकी बहिष्कार का कारण थीं। ट्रंप पहले ही कह चुके थे कि वह विश्व नेताओं के इस वार्षिक सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे। उनकी जगह उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस के शामिल होने की उम्मीद थी, लेकिन उनके कार्यक्रम से परिचित एक सूत्र ने पुष्टि की कि वह भी अब इस सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

मोटे हैं, या मधुमेह है, या हृदय रोग है, या फिर कैंसर है तो नहीं मिलेगा अमेरिकी वीजा, ट्रंप ले आये नई Visa Policy

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व वाले प्रशासन ने आव्रजन नीतियों में एक बार फिर विवादास्पद रुख अपनाते हुए विश्वभर में स्थित अमेरिकी दूतावासों और वाणिज्य दूतावासों को यह निर्देश दिया है कि वह ऐसे विदेशी नागरिकों को वीज़ा देने से मना करें जिनकी कुछ गंभीर या दीर्घकालिक चिकित्सीय स्थितियाँ हैं। यह निर्णय अमेरिकी आव्रजन प्रणाली में ष्स्वास्थ्यष् को एक निर्णायक तत्व के रूप में स्थापित करने की दिशा में उठाया गया एक नया कदम है, जिसने मानवाधिकारों, समानता और वैश्विक गतिशीलता पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। देखा जाये तो ट्रंप प्रशासन द्वारा जारी इस नई वीज़ा नीति के तहत, जिन विदेशी नागरिकों को अमेरिका में प्रवेश या स्थायी निवास की अनुमति चाहिए, उनके स्वास्थ्य की स्थिति अब उनके आवेदन के परिणाम को सीधे प्रभावित करेगी। ज्ञथ्थ् भ्मंसजी छमू की रिपोर्ट के अनुसार, प्रशासन ने यह निर्देश दिया है कि ऐसे लोगों को ष्वीज़ा के लिए अयोग्यष् माना जाए जिनकी बीमारियाँ सार्वजनिक संसाधनों पर बोझ बन सकती हैं। नीति में जिन बीमारियों का उल्लेख किया गया है, उनमें हृदय रोग, श्वसन संबंधी रोग, कैंसर, मधुमेह, मेटाबॉलिक बीमारियाँ, तंत्रिका संबंधी रोग, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ और यहाँ तक कि मोटापा तक शामिल हैं। निर्देश में कहा गया है कि ऐसे रोगों के इलाज पर ष्लाखों डॉलर तक खर्चष् हो सकते हैं, इसलिए इन्हें संभावित सार्वजनिक भार की श्रेणी में रखा जाए। यह भी कहा गया है कि वीज़ा अधिकारी आवेदक की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करें कि क्या वह बिना अमेरिकी सरकार की किसी सहायता के अपने उपचार का पूरा खर्च उठा सकता है। साथ ही, परिवार के सदस्योंकृ विशेषकर बच्चों या बुजुर्ग माता–पिता की स्वास्थ्य स्थिति को भी ध्यान में रखा जाए, क्योंकि उनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी आवेदक की आर्थिक स्थिति और रोजगार क्षमता को प्रभावित कर सकती है। देखा जाये तो यह नया दिशा–निर्देश ट्रंप प्रशासन की ष्अमेरिका फर्स्टष् नीति के अनुरूप है, जिसमें आव्रजन को न केवल सीमित करने बल्कि सामाजिक कल्याण योजनाओं पर विदेशी नागरिकों की निर्भरता

को रोकने की मंशा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रशासन का तर्क है कि अमेरिकी करदाताओं के धन से केवल अमेरिकी नागरिकों को ही लाभ मिलना चाहिए और विदेशी आवेदकों को प्रवेश से पहले यह साबित करना होगा कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। हालांकि, यह तर्क ष्सामाजिक जिम्मेदारीष् और ष्मानवीय सहानुभूतिष् की वैश्विक अवधारणा के विपरीत है। स्वास्थ्य स्थिति जैसी अनियंत्रित या प्राकृतिक परिस्थिति को किसी व्यक्ति के वीज़ा निर्धारण का आधार बनाना न केवल भेदभावपूर्ण है, बल्कि यह संयुक्त राष्ट्र के Universal Declaration of Human Rights में निहित ष्समान अवसरष् के सिद्धांत को भी चुनौती देता है। देखा जाये तो स्वास्थ्य आधारित वीज़ा मूल्यांकन की प्रक्रिया कोई नई नहीं है, किंतु अब यह मात्र एक चिकित्सीय जाँच से आगे बढ़कर ष्सामाजिक और आर्थिक दंडष् का रूप ले रही है। यह नीति न केवल शारीरिक रूप से अस्वस्थ लोगों को बाहर करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य से जूझ रहे लोगों को भी अप्रत्यक्ष रूप से ष्सामाजिक बोझष् के रूप में चित्रित करती है। इस प्रकार का वर्गीकरण समाज में उस खतरनाक सोच को वैधता प्रदान करता है, जिसमें ष्स्वस्थ और उत्पादकष् व्यक्ति ही मूल्यवान माने जाते हैं, जबकि कमजोर या बीमार व्यक्ति ष्अवांछनीयष् ठहराए जाते हैं। यह आधुनिक सभ्यता के समानता और मानव गरिमा के आदर्शों के प्रतिकूल है। साथ ही यह कदम उस व्यापक नीति–श्रृंखला का हिस्सा है जिसमें ट्रंप प्रशासन ने शरणार्थी आवेदनों को घटाया, अस्थायी वीज़ा की अवधि सीमित की और कई देशों पर यात्रा प्रतिबंध लगाए। हम आपको याद दिला दें कि अगस्त 2025 में घोषित प्रस्ताव के तहत विदेशी छात्रों और मीडिया प्रतिनिधियों के वीज़ा की अवधि अधिकतम चार वर्ष तक सीमित कर दी गई थी और सितंबर में जारी एक अधिसूचना के अनुसार भ–1ठ वीज़ा आवेदकों पर अतिरिक्त 1 लाख डॉलर का शुल्क लगाया गया था। इन सबके बीच यह स्वास्थ्य–आधारित नीति अमेरिका की आव्रजन प्रणाली को एक प्रकार से "आर्थिक योग्यता आधारित चयन प्रणाली" में बदल देती है, जिसमें केवल युवा, स्वस्थ और संपन्न व्यक्तियों को ही ष्स्वागत योग्यष् माना जा सकता है। देखा जाये तो यह नीति न केवल एक प्रशासनिक निर्णय है, बल्कि यह अमेरिका की नैतिक दिशा का भी दर्पण है। जिस राष्ट्र ने शताब्दियों तक स्वयं को "अवसरों की भूमि" के रूप में प्रस्तुत किया, वही अब धीरे–धीरे ष्सुविधाओं की भूमिष् तक सीमित होता जा रहा है। यदि स्वास्थ्य और उम्र को वीज़ा अयोग्यता का आधार बनाया जाएगा, तो यह न केवल भेदभावपूर्ण होगा बल्कि यह वैश्विक स्तर पर अन्य देशों को भी इसी प्रकार की विभेदक नीतियाँ अपनाने के लिए प्रेरित कर सकता है। इससे अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बहरहाल, ट्रंप प्रशासन की यह स्वास्थ्य–आधारित वीज़ा नीति आर्थिक आत्मनिर्भरता के तर्क से शुरू होकर मानवाधिकारों की उपेक्षा तक पहुँचती है। यह नीति एक ऐसे अमेरिका की झलक देती है जो अपनी सीमाओं को केवल भूगोल के आधार पर नहीं, बल्कि शारीरिक और आर्थिक क्षमताओं के आधार पर परिभाषित करना चाहता है। इसलिए यह निर्णय केवल आव्रजन नियंत्रण का नहीं, बल्कि उस मानवीय मूल्यों की परीक्षा का प्रश्न है जिन पर आधुनिक लोकतंत्र खड़ा है। अमेरिका के लिए यह आवश्यक है कि वह सुरक्षा और आर्थिक संतुलन की खोज में अपनी मानवीय पहचान को न खो दे क्योंकि सभ्यता की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संवेदना होती है, न कि उसकी सीमाएँ।

माली में भीषण संकट, अलकायदा-ISIS ने किया 5 भारतीयों का अपहरण, देश में हड़कंप

माली में पाँच भारतीय नागरिकों का अपहरण कर लिया गया है, अधिकारियों ने शनिवार को इसकी पुष्टि की। यह पश्चिम अफ्रीकी देश अल–कायदा और आईएसआईएस से जुड़े आतंकवादी समूहों द्वारा संचालित बढ़ती हिंसा से जूझ रहा है। समाचार एजेंसी एएफपी के अनुसार, कुछ हथियारबंद लोगों ने गुरुवार को पश्चिमी माली के कोबरी के पास भारतीयों का अपहरण कर लिया। एक सुरक्षा सूत्र ने बताया कि ये लोग स्थानीय विद्युतीकरण परियोजनाओं से जुड़ी एक कंपनी में कार्यरत थे। कंपनी के एक प्रतिनिधि ने एएफपी को बताया कि अन्य सभी भारतीय कर्मचारियों को राजधानी बमाको पहुँचा दिया गया है। अभी तक किसी भी समूह ने अपहरण की ज़िम्मेदारी नहीं ली है। प्रतिनिधि ने कहा, ष्हम पाँच भारतीय नागरिकों के अपहरण की पुष्टि करते हैं। कंपनी में काम करने वाले अन्य भारतीयों को राजधानी बमाको पहुँचा दिया गया है। सैन्य जुंटा द्वारा शासित माली वर्षों से अस्थिरता और बढ़ती चरमपंथी हिंसा का सामना कर रहा है। अल–कायदा से जुड़े इस्लाम और मुसलमानों के समर्थन समूह (जेएनआईएम) ने हाल ही में ईंधन की आपूर्ति पर प्रतिबंध को और कड़ा कर दिया है, जिससे पहले से ही गंभीर आर्थिक संकट और भी बदतर हो गया है। माली में विदेशी नागरिकों का अपहरण कोई नई बात नहीं है, जहाँ 2012 से लगातार तख्तापलट और जिहादी हमलों ने राज्य के नियंत्रण को कमज़ोर कर दिया है।

मोदी–नेतन्याहू के दुश्मन का बड़ा ऐलान, मुस्लिमों में जश्न

भारतीय मूल का मुस्लिम अमेरिकी शहर न्यूयॉर्क का मेयर चुनाव जीत गया है। डोनाल्ड ट्रंप ने धमकी दी थी कि अगर जोहरान ममदानी चुनाव जीतता है, तो वह न्यूयॉर्क में फंड की कटौती कर देंगे। लेकिन अब जोहरान ममदानी जीत चुका है। अब देखना होगा कि डॉनल्ड ट्रंप किस तरह की प्रतिक्रिया देते हैं। आपको बता दें कि चुनाव से कुछ दिन पहले ही जोहरान ममदानी ने वामपंथियों और कट्टरपंथियों का वोट बटोरने के लिए पीएम मोदी और भारत का अपमान किया था। जोहरान ममदानी ने मुस्लिम कार्ड खेलते हुए कहा था कि मैं भी मुस्लिम हूं लेकिन भारत में मेरी कम्युनिटी के लोगों पर अत्याचार होता है। इतना बोलते ही जोहरान ममदानी को कट्टरपंथियों और वामपंथियों के खूब वोट मिले होंगे। वैसे आपको बता दें कि ममदानी के पिता महमूद ममदानी गुजराती मूल के मुस्लिम हैं और उनकी मां लिबरल हिंदू मीरा नायर हैं। ममदानी की जीत पर भारत का पक्का दोस्त इजरायल भी भड़का हुआ है। न्यूयॉर्क वैसे भी कोई साधारण शहर नहीं है, फिर भी ज़ोहरान ममदानी की जीत न्यूयॉर्क के मानकों के हिसाब से भी असाधारण है। महज 34 साल के भारतीय/दक्षिण एशियाई/युगांडाई मूल के मुस्लिम व्यक्ति ममदानी और उनके विचारों को दुनिया भर में प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। इन विचारों में से एक है उनका फ़िलिस्तीन समर्थक और ज़ायोनिज़्म विरोधी रुख़, यही वजह है कि उनकी जीत ने इज़राइल और उसके यहूदी नागरिकों के एक बड़े हिस्से में भी हलचल मचा दी है। यरुशलम निवासी हाना जैगर ने ममदानी की उस शहर में सफलता के बाद समाचार एजेंसी एपी को बताया बहुत बुरा। यहूदियों के लिए, इज़राइल के लिए, सबके लिए, यह बहुत बुरा है। आप और क्या कह सकते हैं? इज़राइल के तेल अवीव के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी यहूदी आबादी है। अमेरिका की मुख्यधारा की राजनीति लंबे समय से कट्टर रूप से इज़राइल समर्थक रही है, तब भी जब संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक दृष्टिकोण तेल अवीव की नीतियों और युद्धों की आलोचना करते रहे हैं।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

अफगानिस्तान-पाकिस्तान शांति वार्ता फिर विफल, सीमा पार आतंक पर नहीं बनी बात

इस्लामाबाद। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच जारी तीसरे दौर की शांति वार्ता बिना किसी ठोस समझौते के समाप्त हो गई। दोनों देशों के बीच सीमा पार आतंकवाद पर कार्रवाई को लेकर मतभेद कायम रहे। पाकिस्तान की ओर से रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने बताया कि वार्ता में कोई लिखित समझौता नहीं हो सका और अब चौथे दौर की कोई योजना भी नहीं है। दो दिन तक चली ये वार्ता बृहस्पतिवार को शुरू हुई थी। पाकिस्तान ने अफगान तालिबान से यह मांग की थी कि वे तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान के उन आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई करें जो अफगान धरती से पाकिस्तान पर हमले कर रहे हैं।

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।